उपनिषदं भो ब्रुहीत्युक्ता त उपनिषद्ब्राह्मीं वाव त उपनिषदमब्रूमेति ।।७ ।।

शिष्य : ''ओ गुरुदेव! मुझे उपनिषद् (ब्रह्मविद्या) का उपदेश दें।''

गुरुदेव : ''हम ब्रह्मविद्या का उपदेश दे चुके। हम निश्चित ही ब्रह्मविद्या का उपदेश दे चुके हैं।''

एकमात्र ब्रह्म अथवा परमात्मा ही सत् है। वह सबका आत्मा है। वह सर्वस्व है। वह इस ब्रह्माण्ड का सारतत्त्व है। वह ऐसा अद्वैत तत्त्व है जो प्रकृति की सभी विविधताओं तथा भिन्नताओं में भी कभी द्वैत स्वीकार नहीं करता। आप वही अमर, सर्वव्यापक, सर्वानन्दमय ब्रह्म हैं। 'तत्त्वमसि'ह्नह्नतुम वही (ब्रह्म) हो। इसका साक्षात्कार करें तथा मुक्त बनें।

स्वामी शिवानन्द

नाँद में कुत्ता

चारे से भरी नाँद में एक कुत्ता घुस कर बैठ गया। एक बैल चारा खाने आया। बैल ने कहाह्नह्न ''प्यारे कुत्ते! चारा तुम्हारे काम का नहीं है। मुझे खाने दो।'' कुत्ते ने कहाह्नह्न''चारे का मेरे लिए कोई उपयोग नहीं। मैं उसे खा नहीं सकता हूँ। फिर तुम्हीं क्यों खाओ ?''

कुत्ता बड़ा स्वार्थी था। बहुत से बच्चे, विद्यार्थी और मनुष्य ऐसे हैं जो इस कुत्ते की तरह स्वार्थी होते हैं। वे सब-कुछ अपने ही लिए चाहते हैं। उन्हें दूसरों के हितों का कुछ भी ख्याल नहीं रहता। वह यह नहीं चाहते कि दूसरों को भी लाभ हो। स्वार्थी मनुष्य हमेशा यही समझता है कि एकमात्र वही सही है, बाकी सब गलत हैं।

स्वार्थ छोड़ो। दूसरों के दृष्टिकोण से देखने का प्रयत्न करो। निःस्वार्थ बनो। दूसरों को सुख देने का प्रयत्न करो। तुम्हारे पास जो-कुछ हो, दूसरे बच्चों को भी बाँटों। दूसरों के हितों का ध्यान रखो। तुम सुखी होओगे। तुम महान् बनोगे।

ब्रह्मचर्य-साधना :

विवाह करें अथवा न करें ५

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

विवाह न कीजिए। विवाह न कीजिए। विवाह न कीजिए। विवाह के पश्चात् बचाव कठिन है। विवाह सबसे बड़ा बन्धन है। स्त्री निरन्तर उत्पीड़न तथा अशान्ति का स्रोत है। बुद्ध, पट्टिनत्तु स्वामि, भर्तृहरि, तथा गोपीचन्द ने क्या किया? क्या वे स्त्री के बिना सुख तथा शान्ति से नहीं रहे?

इस पार्थिव जगत् में काम सबसे बड़ा शत्रु है। यह मनुष्य को निगल जाता है। मैथुन के अनन्तर बहुत विषाद होता है। आपको अपनी पत्नी को प्रसन्न रखने तथा उसकी आवश्यकताओं और विलास-वस्तुओं की पूर्ति के लिए धनोपार्जन करने में अत्यधिक प्रयास करना पड़ता है। धन प्राप्त करने के लिए आप विविध प्रकार के पाप करते हैं। आप मन से अपनी पत्नी के कष्ट तथा शोक में और अपने बच्चों के कष्ट तथा दुःख में भी भागीदार बनते हैं। आपको परिवार को चलाने के लिए सहस्रों प्रकार की चिन्ताएँ करनी पड़ती हैं। क्योंकि दो मन सहमत नहीं हो सकते, अतः घर में सदा कलह होता रहता है। आपको व्यर्थ ही अपनी आवश्यकताओं तथा उत्तरदायित्वों को बढ़ाना होता है। आपकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। वीर्य-द्रव की भारी क्षति के कारण आप रोगों, अवसाद, दुर्बलता तथा जीवन-शक्ति की क्षति से आक्रान्त होंगे। इसके परिणाम-स्वरूप आपकी असामयिक मृत्यु होगी। अतः अखण्ड ब्रह्मचारी बनें तथा दुःखों, चिन्ताओं और झंझटों से अपने को मुक्त करें।

प्रकाश की उपस्थिति में अन्धकार नहीं रह सकता है। इसी प्रकार विषय-सुख की उपस्थिति में आत्मानन्द नहीं रह सकता है। सांसारिक लोग विषय-सुख तथा आत्मानन्द एक ही समय में, एक ही पात्र में चाहते हैं। यह सर्वथा असम्भव है। वे सांसारिक वैषयिक सुख का परित्याग नहीं कर सकते। वे अपने विश्वास की गहनतम अनुभूति में सच्चा विश्वास नहीं रख सकते हैं। वे बातें अधिक करते हैं। सांसारिक व्यक्ति समझते हैं कि वे सुखी हैं; क्योंकि उन्हें कुछ अदरक-मिश्रित बिस्कुट, कुछ धन तथा स्त्री प्राप्त हैं। इन बेचारे प्राणियों को और क्या चाहिए? काम-वासना के द्वारा संसार में अधिक भिखमंगे उत्पन्न होते हैं। सभी सांसारिक सुख आरम्भ में अमृत प्रतीत होते हैं; किन्तु परिणाम में सांघातिक विष बन जाते हैं। जब व्यक्ति विवाहित जीवन में फँस जाता है, तो वह मोह के विविध बन्धनों को कठिनाई से तोड़ पाता है। अतः इस भ्रामक जीवन में निष्ठा रखना त्याग दें। निर्भीक रहें। इन्द्रियों तथा मन पर नियन्त्रण रखें। आपमें वैराग्य का विकास होगा। आप ब्रह्मचर्य में पूर्णतया प्रतिष्ठित होंगे।

अखण्ड ब्रह्मचारी

यदि आप बारह वर्षों तक अखण्ड ब्रह्मचारी रह सकें, तो आप किसी अन्य साधना के बिना ही तत्काल भगवद्-साक्षात्कार कर लेंगे। आप जीवन

के लक्ष्य को प्राप्त कर चुके हैं। यहाँ 'अखण्ड' शब्द पर ध्यान दीजिए।

वीर्य-शक्ति एक प्रभावशाली शक्ति है। वीर्य ब्रह्म ही है। जिस ब्रह्मचारी ने पूरे बाहर वर्षों तक अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन किया है, वह **'तत्त्वमसि'** महावाक्य के श्रवण करते ही निर्विकल्प-समाधि की अवस्था प्राप्त कर लेगा; क्योंकि उसका मन नितान्त शुद्ध, सबल तथा एकाग्र होगा।

अखण्ड ब्रह्मचारी, जिसके वीर्य का एक बूँद भी स्राव बारह वर्षों तक न हुआ हो, अप्रयास ही समाधि में प्रवेश कर जाता है। प्राण तथा मन उसके सर्वथा वश में होते हैं। बाल ब्रह्मचारी अखण्ड ब्रह्मचारी का पर्यायवाची शब्द है। अखण्ड ब्रह्मचारी में प्रबल धारणा-शक्ति, स्मृति-शक्ति तथा विचार-शक्ति होती है। उसे मनन तथा निदिध्यासन के अभ्यास की आवश्यकता नहीं होती। यदि वह एक बार भी महावाक्य सुनता है, तो उसे तत्काल आत्म-साक्षात्कार प्राप्त हो जाता है। उसकी बुद्धि निर्मल तथा समझ सुस्पष्ट होती है। अखण्ड ब्रह्मचारी बहुत ही दुर्लभ हैं; किन्तु कुछ अवश्य हैं। यदि आप उचित दिशा में प्रयास करें, तो आप भी अखण्ड ब्रह्मचारी बन सकते हैं।

आपको प्रतिक्रिया के प्रति बहुत ही सावधान रहना पड़ेगा। जिन इन्द्रियों को कुछ महीनों अथवा एक-दो वर्षों तक नियन्त्रण में रखा है, यदि आप सदा सावधान तथा सचेत न रहे, तो वे विद्रोही बन जाती हैं। वे अवसर प्राप्त होते ही विद्रोह कर बैठती हैं और आपको बाहर घसीट लाती हैं। कुछ लोग, जो एक या दो वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालन करते हैं, अन्त में अधिक कामुक बन जाते हैं और अपनी (वीर्य) शक्ति का अत्यधिक अपव्यय करते हैं। कुछ लोग असुधार्य दुराचारी तथा अपने जीवन-पोत को भंग करने वाले भी हो जाते हैं।

जटा रखने तथा मस्तक और शरीर में भस्म लगाने से ही कोई अखण्ड ब्रह्मचारी नहीं बनता। जिस ब्रह्मचारी ने अपने स्थूल शरीर तथा इन्द्रियों को तो वश में कर लिया है; किन्तु निरन्तर कामुक विचारों में रमण करता रहता है, वह पक्का दम्भी है। उसका कभी भी विश्वास नहीं करना चाहिए। वह कभी भी संकटजनक बन सकता है। **(अनूदित)**

प्रत्येक चेहरे में भगवान् के दर्शन करें। भेद-दृष्टि ही मृत्यु है और अभेद-दृष्टि अमर जीवन है। महानता और लघुता के भाव अज्ञानजन्य ही होते हैं। अपनी सम्पत्ति में सभी को सहभागी बनायें। अपने देश तथा मानवता की आत्म-भाव से सेवा करें। कुमारावस्था में ही आध्यात्मिक बीज वपन करें। एक ही शक्ति इन सब हाथों के द्वारा कार्य कर रही है, इन समस्त आँखों से देख रही है, सब मुखों से आहार ग्रहण कर रही है। इस महान् रहस्य को समझें तथा सर्वत्र अद्वैतता का अनुभव करें। विश्व-भ्रातृत्व तथा विश्व-प्रेम का विकास करें।

स्वामी शिवानन्द

सक्रिय नि:स्वार्थ भाव!

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

मोक्ष की ओर का प्रथम पग हैह्वह्वप्राणी मात्र के प्रति नि:स्वार्थ सेवा की साधना में संलग्न हो जाना। यदि हमारी आन्तरिक मन:स्थिति स्वार्थपूर्ण है, तो प्राणी मात्र के प्रति नि:स्वार्थ सेवा कर पाना असम्भव है। जब हम अन्य सभी वस्तु-व्यक्तियों से बढ़ कर अपने-आपको ही प्रेम करते हैं, तब हमारा सम्पूर्ण जीवन स्वार्थ पर ही आधारित होगा। जब यह तथ्य स्पष्टतया समझ में आ जाता है, तब व्यक्ति स्वयं को बन्धन में डालने वाली स्वार्थ-शृंखलाओं से मुक्त करने का प्रयास करता है तथा अपने प्रेम को समस्त संसार के प्रति विस्तारित करता है। भगवान् की सम्पूर्ण सृष्टि, जिसमें जीव, जन्तु, रेंगने वाले जीव, कीट-पतंगे, जलचर, नभचर, यहाँ तक कि हमारे पैरों के नीचे उगने वाली घास के प्रति भी वह अपने प्रेम को विस्तारित करता है।

हम सद्भावना तथा सभी के भले का केन्द्र बनने का प्रयत्न करते हैं। हमारे ध्यान में लाये जाने के स्तर से निम्न कुछ भी नहीं समझा जाता। क्योंकि सब-कुछ उस महान् रचयिता द्वारा रचा गया है, इसलिए छोटी-बड़ी सभी वस्तुएँ महान् हैं। केवल ऐसे चिन्तन से ही आध्यात्मिक जीवन आरम्भ होता है, क्योंकि जब तक स्व-प्रेम का स्थान सर्व-प्रेम नहीं ले लेता, तब तक स्वार्थपरता पर विजय नहीं पायी जा सकती और जब तक स्वार्थपरता पराजित नहीं होती, तब तक व्यक्ति की अहं-संचालित चेतना से मुक्ति प्राप्त करने की प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ सकती। स्वार्थपरता की विपरीत भावना का सक्रिय रूप में अभ्यास करके ही हम स्वार्थ-भावना पर विजय पा सकते हैं।

नि:स्वार्थ भाव का सक्रिय रूप से अभ्यास करना नि:स्वार्थ सेवा कहलाता है। अर्थात् बिना किसी निहित आशय के, कुछ भी कामना न रखते हुए, कुछ भी आशा न करते हुए, यहाँ तक कि प्रशंसा अथवा धन्यवाद की भी आशा न करना। कहते हैं कि वास्तव में नि:स्वार्थ सेवा तो गुप्त रूप से करनी चाहिए। जिसकी सेवा की जा रही है, उसे भी ज्ञात न हो कि कौन सेवा कर रहा हैह्वह्व''आपके बायें हाथ को भी ज्ञात न हो कि आपका दाहिना हाथ क्या कर रहा है।'' वास्तव में आदर्श सेवा, सर्वोत्तम नि:स्वार्थ सेवा यही है।

यह होना केवल तभी सम्भव हो सकता है, यदि व्यक्ति स्वयं को स्व-प्रेम से मुक्त करके सम्पूर्ण सृष्टि तक उसका प्रसार कर ले। यह प्रेम अवैयक्तिक होता है। यह निर्विषयक और निर्वैयक्तिक प्रेम है। यह दिव्य, आध्यात्मिक अतिमानवीय है, भले ही इसका प्रारम्भ मानवीय स्तर से होता है। यह पूर्णतया आशय रहित, इच्छा रहित प्रेम है। ऐसा प्रेम हो, तो यह चमत्कार कर सकता है। इसमें हमारी अन्तःचेतना में परिवर्तन ला कर पूर्णतया नवीनीकरण कर देने की क्षमता है।

हम अपने हृदय के द्वारा, अपने मन और अपनी दृष्टि के द्वारा भगवान् के द्वारा रची हुई इस सृष्टि को इस प्रकार देखते हैं जैसे भगवान् स्वयं अपनी सृष्टि को देखते हों। यह हम भगवान् की ही अपने में से अभिव्यक्ति करते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम समस्त सृष्टि को प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखते हैं, क्योंकि भगवान् और प्रेम में अन्तर नहीं है। वह दोनों एक ही हैं।

अत: प्रेम एक ऐसी वस्तु है जो मानवीय मनोभावों और भावनाओं से कहीं अधिक ऊपर, उससे परे है। यह हमारा वह अंग है जो हमारी मानव-प्रकृति का नहीं है, क्योंकि हमारा वास्तविक स्वरूप तो मानवीय नहीं है। हमारा जो भाग परमात्मा का अंश है, वही हमारी वास्तविक पहचान है और यह पूर्णतया दिव्य है। और वह उतना ही प्रेम और दया का सागर है जैसे कि परमात्मा है। इस प्रेम को दया, भलाई, करुणा, लाभ, उपयोग और सेवा-भाव के कार्यों में अभिव्यक्त करना मोक्ष की ओर का प्रथम कदम है।

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्त:शक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

इतिहास एवं पुराण ५

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

ब्रह्माण्ड की नियन्ता परम सत्ता के दृष्टिकोण से कोई भी घटना एक ऐसी विश्व-व्यापक प्रक्रिया है जो उस चेतना से अविच्छेद्य है जिसकी परिधि के अन्तर्गत वह घटना घटित हो रही है। दिक्काल स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। यह दो या दो से अधिक घटनाओं के बीच सम्बन्ध जोड़ता है। दिक्काल का यह जगत् (जिसमें हम सब रह रहे हैं) ही एकमात्र सम्भव जगत् नहीं है। विभिन्न सन्दर्भों तथा चेतना के विभिन्न रूपों के अनुसार विभिन्न दिक्कालों वाले विभिन्न जगत् हो सकते हैं। संसार के इतिहास को अन्तिम सत्य के रूप में स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं है। आलोचनात्मक विश्लेषण करने पर वस्तुओं के ऐतिहासिक अस्तित्वों की वास्तविकता उसी प्रकार लुप्त हो जाती है जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश में कोहरा।

जिसे हम इतिहास कहते हैं, वह तथाकथित ऐतिहासिकता से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। किसी ऐतिहासिक पात्र के बारे में स्थूल रूप से इतना ही सोच लिया जाता है कि वह ऐसा व्यक्ति होगा, जिसे उसके काल में भौतिक चक्षुओं से देखा जा सकता होगा। जिसे कभी नहीं देखा गया हो, उसका अस्तित्व अविश्वसनीय माना जायेगा। आज कोई व्यक्ति यह कहने को तैयार नहीं है कि उसने अपनी आँखों से राम या कृष्ण को देखा है, इसलिए हम उनकी वास्तविकता पर सन्देह करने लगे हैं। जिस वस्तु की सत्ता को हम प्रयोगाश्रित या अनुभवजन्य विधियों से तत्काल प्रमाणित नहीं कर सकते, हम उस पर विश्वास ही नहीं करते। तथाकथित ऐतिहासिकता की धारणा से हम इस सीमा तक प्रभावित हैं कि हम यह भूल जाते हैं कि एक निश्चित काल-खण्ड में अनुक्रम से एक के बाद दूसरी घटित होने वाली घटनाएँ ही इतिहास नहीं हैं। ऐन्द्रिक सीमाओं से परे की स्थितियाँ और वास्तविकताएँ भी इतिहास बन सकती हैं।

क्या ईश्वर एक ऐतिहासिक व्यक्ति है? उसके अस्तित्व पर शायद इसीलिए सन्देह किया जाता है कि उसे अनुभवाश्रित इतिहास की कसौटी पर नहीं कसा जा सकता। क्या विश्व या ब्रह्माण्ड ऐतिहासिक सत्ताएँ हैं? आधुनिक सापेक्षवाद के सिद्धान्त के निष्कर्षों तथा एडिंगटन और ह्वाइटहेड जैसे विचारकों द्वारा प्रस्तुत इस सिद्धान्त की दार्शनिक व्याख्याओं ने विश्व में पायी जाने वाली वस्तुओंह्वह्वजैसे स्थान, स्थूल वस्तुएँ आदिह्वह्वकी अल्पकालिक ऐतिहासिकता की धज्जियाँ उड़ा दी हैं। ऐसी स्थिति में रामायण और महाभारत के पात्रों के ऐतिहासिक अस्तित्व पर सन्देह करते समय हिचकिचाहट का अनुभव वास्तव में होना चाहिए।

वाल्मीकि और व्यास का ज्ञान-क्षेत्र इतिहास की अनुभवाश्रित दृष्टि की सीमाओं से कहीं आगे है। उन्होंने ब्रह्माण्ड को परम सत्य की दृष्टि से देखा। ऋषि-मुनियों ने ब्रह्माण्ड का जो इतिहास प्रस्तुत किया है, वह अदीक्षित मानव-मन की समझ से परे है। इस

इतिहास के निहितार्थ को समझना एक सामान्य व्यक्ति के लिए उतना ही कठिन है, जितना माध्यमिक कक्षा के विज्ञान के विद्यार्थी के लिए आइंस्टीन के सिद्धान्तों को स्वयं पढ़ कर समझना। जो ब्रह्माण्ड-व्यापक परिप्रेक्ष्य में घटनाओं पर विचार नहीं कर सकता, वह इन महाकाव्यों (जिनमें उपनिषदों में उद्घाटित परम तत्त्व की यथार्थता के बाह्य अर्थों की उद्घोषणा है) में निहित सत्यता को भली-भाँति नहीं समझ सकता।

किसी वस्तु का इतिहास यह नहीं है कि किसी विशेष स्थान पर उस (वस्तु) के साथ क्या बीती, वरन् यह है कि समग्र सृष्टि में उसका क्या स्थान है? हमारी सत्ता किसी विशेष स्थान या देश में ही नहीं है। हमारी सत्ता ब्रह्माण्ड में है। हम दर्शक हैं या तीर्थयात्री हैं, विदेशी नागरिक हैं या अमुक स्वभाव, गुण या चरित्र वाले हैंह्वह्वयह सब हमारे व्यक्तित्व का वर्णन है; परन्तु हम इन सबके अतिरिक्त और कुछ भी हैं। ब्रह्माण्ड में हमारा जो स्थान है, वही हमारा वास्तविक स्थान है। किसी व्यक्ति का अध्ययन करने के लिए हमें ब्रह्माण्ड-सम्बन्धी यही दृष्टिकोण अपनाना होगा, अन्यथा हमारा अध्ययन पूर्ण और विश्वसनीय नहीं रह पायेगा।

वास्तविक अर्थों में जो ऐतिहासिक अध्ययन करता है, वह व्यक्तियों, वस्तुओं या परिस्थितियों को टुकड़ों में विभाजित करके और प्रत्येक टुकड़े को स्वतन्त्र अस्तित्व के रूप में स्वीकार करके उन पर विचार नहीं करता। व्यास जैसे मनीषियों के दृष्टिकोण से किसी व्यक्ति के जीवन-चरित्र में केवल शरीर के समाजशास्त्रीय अस्तित्व का ही नहीं वरन् शरीर, मन और आत्माह्वह्वतीनों का वर्णन होता है। जिस प्रकार हमने अपने सामाजिक सम्बन्धों की परिधि में सारे राष्ट्रों को घेर लिया है, उसी प्रकार हमारी जीवात्माओं की पहुँच अस्तित्व के समस्त स्तरों तक है। यह इतिहास की व्यापक दृष्टि है। 'क्या कृष्ण का अस्तित्व था?' इस प्रकार के प्रश्न इस दृष्टि से विचार करने पर नहीं उठ सकते। जब सृष्टि के समग्र परिप्रेक्ष्य में इस (सृष्टि) पर विचार किया जाता है, तब इसके अन्तर्गत समस्त वस्तुएँ ऐतिहासिक वास्तविकता बन जाती हैं।

यूरोप तथा भारत का इतिहास पढ़ते समय हमारा जो दृष्टिकोण रहता है, उससे नितान्त भिन्न दृष्टिकोण से हमें ब्रह्माण्ड के इतिहास का अध्ययन करना पड़ता है। किसी कवि का कथन है कि जिस प्रकार अन्तरिक्ष के तारकों की व्यवस्था में व्यवधान डाले बिना हम एक पुष्प का स्पर्श तक नहीं कर सकते, उसी प्रकार किसी व्यक्ति की वास्तविकता का मूल्यांकन हम तब तक नहीं कर सकते, जब तक हम व्यापक दृष्टि से इस पर विचार न करें कि सृष्टि में उसका स्थान क्या है? यह बात मानव-प्राणियों पर ही नहीं, संसार के सूक्ष्मातिसूक्ष्म अणु पर भी लागू होती है।

यही इतिहास का आन्तरिक सत्य है। व्यक्ति की वास्तविकता समझने के लिए केवल यही दृष्टिकोण अपनाना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त और कोई वस्तु महाभारत और रामायण के मुख्य पात्रों के ऐतिहासिक अस्तित्व को असत्य सिद्ध नहीं कर सकतीह्वह्वभले ही सांसारिक इतिहास के प्रति हमारी भौतिक दृष्टि पर आधारित हमारा दृष्टिकोण क्यों न हो। यदि हम इन पात्रों के अस्तित्व को प्रमाणित नहीं कर सकते, तो इसका यह तात्पर्य नहीं है कि किसी समय में वे इस धरती पर जन्मे ही नहीं।

(अनूदित)

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

नीति-कथाएँ ३

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

लड्डू की आत्मकथा

मैं लड्डू हूँ। मैं बड़ा मीठा और स्वादिष्ट हूँ। सभी मुझे खूब चाहते हैं। बच्चे तो मुझे बहुत ही चाहते हैं। जब कभी मुझे देखते हैं या मेरा नाम सुनते हैं, तो उनके मुँह में पानी भर आता है। कोई भण्डारा या विवाह का भोज ऐसा नहीं होता, जहाँ मैं न होऊँ। साधु लोग मुझे बड़े चाव से भक्षण कर जाते हैं।

मैं रोते बच्चों को हँसाता हूँ, खुश करता हूँ। कमजोर आदमी में मैं प्राण भरता हूँ। मुझे खा कर लोग मोटे-ताजे हो जाते हैं। उनके गाल तथा त्वचा चमकने लगती है। लोग मेरा बड़ा ध्यान रखते हैं। मुझे कीमती बरतनों में, आलमारियों में और पेटियों में रखते हैं। मैं चीनी, घी और बेसन का मूल्य बढ़ा देता हूँ।

मेरे अन्दर भी आत्मा या ईश्वर निवास करता है। मैं उसके बिना जी नहीं सकता। जिस तरह लोग मुझे चाहते हैं, उसी तरह वे यदि ईश्वर को चाहते तो बहुत समय पहले ही परमानन्द प्राप्त कर लेते।

जीवन की दौड़

एक लड़का था। उसका नाम रामू था। एक दिन वह गंगा में नहाने गया। अचानक एक हाथी उसे मारने के लिए दौड़ा। लड़का डर गया। वह गंगासागर (पतली टोंटी और चौड़े मुँह वाला बरतन) के अन्दर घुस गया। हाथी भी उसके पीछे-पीछे गंगासागर के अन्दर गया। लड़का उसकी टोंटी में से बाहर आ गया। हाथी भी बाहर आ गया, लेकिन उसकी पूँछ टोंटी में ही अटक गयी। हाथी अपनी पूँछ से हाथ धो बैठा।

लड़का एक तुलसी के पौधे पर चढ़ गया, लेकिन उसके बाल (चोटी) नीचे लटकते रहे। हाथी उन्हीं बालों को पकड़ कर पेड़ पर चढ़ गया। लड़के ने बाल काट डाले और हाथी नीचे गिर कर मर गया।

हे गोविन्द! नदी कामना और वासनाओं का जीवन है। लड़का जीव है। हाथी माया है। गंगासागर संन्यास है। नली गुफा है। तुलसी का पौधा भय का वृक्ष है। बाल पुरानी वासनाएँ हैं। वासनाओं को काट दो, माया खत्म हो जायेगी। पुराने संस्कारों को मिटा कर तुम शान्ति पाओगे।

सच्ची मित्रता

सिसिली में सिरेकूज के राजा डाइनेशियस ने पाइथियास को मरणदण्ड दिया। पाइथियास ने राजा से कहाह्नह्न''मैं घर जा कर वहाँ का काम-काज निपटा आऊँ। मैं फाँसी के दिन हाजिर हो जाऊँगा।''

राजा ने कहाह्नह्न''तुम्हारे लौटने का क्या भरोसा!''

पाइथियास के मित्र डायमोन ने कहाह्नह्न ''पाइथियास के बदले मैं कैदखाने में रहूँगा। वह नहीं लौटे, तो मुझे फाँसी दे दीजिएगा।'' राजा ने

पाइथियास को घर जाने की अनुमति दे दी। डायमोन उसकी जगह बन्दी बना लिया गया। पाइथियास घर पहुँचा और सारा काम-काज निबटा दिया। जोर की आँधी आने के कारण वह ठीक समय पर लौट नहीं पाया। सिपाही डायमोन को फाँसी देने के लिए ले जाने लगे।

इतने में पाइथियास घोड़े को तेजी से भगाता हुआ आ पहुँचा। राजा ने दण्ड देने वाले अधिकारियों से कहा ''ठहरो! फाँसी न दो। इन लोगों ने मुझे सच्ची मित्रता का पाठ सिखाया है। मैं इन दोनों सच्चे मित्रों के बीच तीसरा मित्र बन कर रहना चाहता हूँ।''

(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

प्रकाशित हो गयी है :

अनमोल मोती

लेखक : स्वामी रामराज्यम्

हमारे बाल-पाठक ईश्वरोन्मुखी दिव्य जीवन व्यतीत करते हुए सबके सच्चे सेवक बन जायें, इस उद्देश्य से ६५ बाल-कहानियों का यह संग्रह प्रकाशित किया गया है। इस संग्रह की कहानियों की भाषा सरल है तथा शैली सरस। ये मानव-जीवन को सार्थक तथा दूसरों के लिए उपयोगी बनाने का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय की हिन्दी पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी इन कहानियों को एक ही पुस्तक में संकलित पा कर अब बाल-पाठक इन्हें अपनी सुविधानुसार बार-बार पढ़ सकेंगे तथा इनके सन्देशों को सरलतापूर्वक आत्मसात् कर सकेंगे।

बालकों को दिये जाने वाले उपहारों के रूप में उपयुक्त तथा विद्यालय-पुस्तकालयों के लिए अमूल्य इस संग्रह की कहानियों की सराहना अभिभावकों ने भी की है। नवदम्पति भी अपनी भावी सन्तानों में अच्छे संस्कारों का बीजारोपण करने के लिए इन कहानियों को उपयोगी पायेंगे।

अवश्यमेव पठनीय इन कहानियों के अनमोल मोती बाल-पाठकों की अमूल्य निधि के रूप में संग्रहणीय हैं।

पृष्ठ-संख्या : १६८ आकार : डिमाई मूल्य : रु. ७०/-

प्राप्ति-स्थान

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, शिवानन्द पब्लिकेशन लीग

पत्रालय : शिवानन्दनगर २४९ १९२

जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड (हिमालय), भारत

बाल-स्तम्भ :

भगवान् की मुकुट-मणि बनना

स्वामी रामराज्यम्

एक थे पण्डित गोपबन्धु। वह उड़ीसा प्रान्त में साक्षीगोपाल के निकट एक गाँव में रहते थे। गाँव से थोड़ी ही दूरी पर ऋषिकुल्या नदी बहती थी। एक वर्ष ऋषिकुल्या में बाढ़ आ गयी। कई गाँव पानी में डूब गये। कई गाँवों के चारों ओर पानी भर गया और आने-जाने का रास्ता बन्द हो गया। उन गाँवों में रहने वालों के कष्टों की सीमा नहीं थी। घर गिर गये। खेतों में खड़ी फसलें नष्ट हो गयीं। पशु डूब कर मर गये। जिस समय गोपबन्धु ने यह समाचार सुना, उस समय उनका पुत्र बहुत बीमार था। एक ओर पुत्र के रोग से उत्पन्न चिन्ता, दूसरी ओर बाढ़ की चपेट में आये अनेकानेक लोगों के कष्टों को सुन कर होने वाली व्याकुलता। कुछ देर के लिए वह गम्भीर हो गये। फिर अपने परिवारवालों से बोलेह्न ''बेटे का इलाज डाक्टर कर ही रहे हैं। देखभाल तुम लोग कर ही रहे हो। मेरे मित्रगण रात-दिन यहीं बैठे रहते हैं। और फिर, सबसे बड़े डाक्टर भगवान् तो हमेशा यहीं हैं। अब यहाँ मेरा क्या काम है? मैं तो चला बाढ़ से घिरे गाँवों की ओर। वहाँ न जाने कितने लोग मर गये हैं, न जाने कितने मरने वाले हैं। अब मेरी जरूरत यहाँ नहीं, उन गाँवों में है।'' पत्नी ने उन्हें रोका, उनके पैर पकड़े। लेकिन गोपबन्धु घर से चल दिये।

उन्होंने कई झोलों में दवायें भरीं। तीन-चार बोरों में गुड़, चिउड़ा, अनाज और कपड़े इकट्ठा करके भरे। फिर एक नाव में उन्हें रख कर ऋषिकुल्या नदी में उतर गये। कई दिनों तक दौड़-दौड़ कर वह साथ में लायी हुई सामग्री बाँटते रहे। 'जगन्नाथ भगवान् रक्षा करो, रक्षा करो' की रट लगाते रहे और सेवा करते रहे। भूल गये अपने बीमार बेटे को, भूल गये पैर पकड़े हुए चिन्ताकुल पत्नी के चेहरे को। स्वयं भी बीमार पड़े, लेकिन उनके पैरों ने दौड़ना बन्द नहीं किया। इस बीच सरकारी राहत-सामग्री पहुँच गयी। कुछ गैर-सरकारी संस्थायें भी राहत-कार्य में जुट गयीं। कुछ दिनों बाद पानी घटने लगा। स्थिति कुछ-कुछ सामान्य होने लगी। तब वह घर लौटे। घर में सन्नाटा छाया हुआ था। उनका पुत्र चल बसा था। पत्नी बिलख-बिलख कर रोने लगी। गोपबन्धु उससे सिर्फ इतना ही बोलेह्न ''जो लोग मौत की चपेट में आने से बच गये, वे सब तुम्हारे अपने ही हैं। उनके बचने की खुशी में बेटे के वियोग का दुःख भूल जाओ।''

गोपबन्धु पर-सेवा के साकार विग्रह ही थे। उनके अनेकानेक सेवा-कार्यों के कारण ही उड़ीसा-निवासी उन्हें प्यार से 'उत्कल-मणि' (उड़ीसा की मणि) कह कर पुकारने लगे थे।

बच्चो, गोपबन्धु उत्कल-मणि बन गये, तुम क्या बनोगे? तुम बनना भगवान् के मुकुट की मणि। भगवान् कहते हैंह्न 'भगत मेरे मुकुट-मणि'। भगवान् के मुकुट की मणि बनने के लिए तुम्हें भगवान् का भक्त बनना होगा। भक्त बनने के लिए तुम्हें उनका प्रेमी बनना होगा। सारे काम-काज, पढ़ाई-लिखाई करते हुए तुम्हें उन्हें बिलकुल अपना मानना होगा, दिन-रात उनकी याद करनी होगी, उनकी याद कर-करके आँसू बहाने होंगे। और हाँ, एक बात और। जहाँ-जहाँ सेवा का अवसर मिले, आधी रात को भी सेवा करने के लिए वहाँ जाना होगा। बस, तुम भगवान् के भक्त बन जाओगे और भगवान् के मुकुट की मणि भी। □

भगवान् की भक्ति

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

आसक्ति रोग की एकमात्र दवा हैह्वह्वप्रेम। जब प्रेम ही हृदय में न हो, तो आसक्ति का नाश कैसे हो सकता है? आज प्रेम का शोर चारों ओर मचा हुआ है; किन्तु वास्तव में यह प्रेम नहीं है। यह हैं मोह और आसक्ति, जिनके लिए हम प्रेम-जैसा पवित्र शब्द प्रयोग करते हैं। संसार के बाजार में प्रेम के नाम पर लेन-देन का सौदा चल रहा है। आप मुझको कुछ देते हैं, मैं आपको कुछ देता हूँ; परन्तु प्रेम में यह सब-कुछ नहीं है। प्रेम केवल 'देना' जानता है, 'लेना' नहीं। यदि प्रेमी कभी कुछ माँगता भी है, तो वह प्रेम के बदले प्रेम और केवल प्रेम माँगता है।

प्रेम में एक लगन होती हैह्वह्वऐसी लगन कि प्रेमी न दिन देखता है और न रात, न उसे देह-गेह की चिन्ता होती है और न भूख-प्यास की। 'मैं कहाँ हूँ, क्या कर रहा हूँ, और लोग क्या कहेंगे'ह्वह्वप्रेम की लगन यह सब-कुछ भुला देती है। यदि कुछ याद रहता है, तो केवल प्रियतम का नाम तथा प्रियतम का रूप। प्रेम की यह उन्मत्त अवस्था होती है। इस अवस्था में प्रेमी पागल हो जाता है। वह कभी हँसता है, कभी रोता है और कभी गाने लगता है। उस समय संसार या तो उसकी आँखों से बिलकुल ओझल हो जाता है या संसार प्रियतम के रूप में ही दिखायी देने लगता है। उसे अपने योगक्षेम का भी ध्यान नहीं रह जाता। उसके प्रियतम भगवान् स्वयं ही उसका योगक्षेम वहन करते हैं। किन्तु जब तक भक्त अपनी शक्ति का, अपने परिवार का और अपने मित्रों का सहारा लेता हुआ भगवान् से सहायता चाहता है, तब तक वह लाख चिल्लाता रहे, लाख पुकारता रहे, भगवान् उसके पास कभी नहीं आते। जब वह अनन्य भाव से, संसार की आशा छोड़ कर, एकमात्र भगवान् को ही पुकारता है, तब वे उसी क्षण आ जाते हैं। द्रौपदी की सहायता के लिए वे उस समय आये, जब उसने दोनों हाथ उठा कर, निराश्रय हो कर उन्हें पुकारा।

सांसारिक प्रेम भी कोई साधारण वस्तु नहीं है। वह एक बहुत बड़ी शक्ति है। वह अनेक जन्मों के पुण्यों का फल है जो किसी भाग्यशाली को ही मिलता है। सबके हृदयों में सोहनी-महिवाल की तरह प्रेम की आग नहीं होती। ऐसी लगन मनुष्य से भी लग जाना बहुत बड़ी बात है; क्योंकि उस अवस्था में उसका दृष्टिकोण बदल सकता है और उसकी प्रेम-धारा के प्रवाह की दिशा परिवर्तित हो सकती है अर्थात् सांसारिक प्रेम भगवान् की भक्ति में परिणत हो सकता है। ऐसा ही विल्वमंगल और तुलसीदास के जीवन में हुआ था। कौन नहीं जानता कि तुलसीदास ने प्रारम्भ में राम से नहीं, अपनी पत्नी रत्ना से ही लौ लगायी थी?

भक्ति की प्राप्ति में निश्चित रूप से पिछले संस्कारों का हाथ होता है। यदि वे संस्कार प्रबल होते हैं, तो मनुष्य हिंसक व्याध तक के घर में जन्म ले कर परम भक्त बन सकता है। न कुछ पढ़ने-लिखने की जरूरत है, न गुरु की, न सत्संग की। एक विशेष

काल आने पर हृदय से भक्ति की निर्मल धारा अपने-आप फूट पड़ती है, जैसे पहाड़ से कोई पवित्र नदी। भक्त कण्णप्प इस तथ्य के एक ज्वलन्त उदाहरण हैं।

कभी-कभी लोग प्रश्न करते हैं कि क्या संसार में रह कर गृहस्थ जीवन बिताते हुए भी भगवान् की भक्ति की जा सकती है? अवश्य। क्योंकि परमेश्वर न पूजा की उत्तम सामग्री चाहता है, न कोई विशेष भेंट चाहता है, न शरीर को सुखा देने वाली कठोर तपस्या चाहता है, न विद्या, न पाण्डित्य; वह तो केवल भाव का भूखा है। वह सच्ची भक्ति चाहता है; ऐसी लगन, ऐसी मस्ती, ऐसी बेखुदी, ऐसी आग चाहता है जो चैतन्य, शबरी, कण्णप्प आदि में थी। इस अवस्था में प्रतिक्षण आनन्द का ही अनुभव होता रहता है। इस अवस्था में वन, आश्रम, मृगछाला, दण्ड, कमण्डल, माला, गेरुआ वस्त्र, कौपीन, जटाजूट या भभूत आदि का होना अनिवार्य नहीं है। मनुष्य संसार में, घरबार में, परिवार में, पत्नी के सहित, पुत्रों के संग, मित्रों के साथ धर्मानुसार सारे व्यवहार करता हुआ परम भक्त बन सकता है और भक्ति के परिपक्व हो जाने पर ज्ञानी बन कर अखण्ड आनन्द प्राप्त कर सकता है। आप सोच सकते हैं कि भला यह इतनी सुगमता से कैसे हो सकता है? विश्वास कीजिए, यह बात बिलकुल निर्विवाद और नपी-तुली है। जब आपकी लौ एक प्रियतम परमेश्वर से लग जाती है और उसी में आपको आनन्द मिलने लगता है, तब यह स्वाभाविक है कि आपमें संसार के प्रति वैराग्य उत्पन्न हो जाये; क्योंकि जब आपका चित्त एक महान् आनन्द का अनुभव कर रहा है तो पत्नी, पुत्र, मित्र, धन, धरती आदि छोटी-छोटी चीजों से आपको क्या लाभ हो सकता है? इनसे ऊँचे पहुँच कर संसार की चीजें बहुत तुच्छ जान पड़ती हैं। सूरदास ने कहा है– **''जेहि मधुकर अम्बुज रस चाख्यौ क्यों करील फल खावै''** अर्थात् जिस भौंरे ने कमल का रस चख लिया, वह काँटे के फल क्यों खायेगा? राँका-बाँका का जीवन इसी बात का उदाहरण है।

आप सबको भगवान् का आशीर्वाद प्राप्त हो और आप सब भक्ति के अलौकिक रस का पान करें!

दयालु बनिए

सभी छोटे तथा बड़े धर्मग्रन्थों का सार उसी प्रकार निकाल लीजिए, जिस प्रकार मधुमक्खी फूलों में से मधु को निकाल लेती है। सभी प्रकार की बुरी आशाओं तथा कामनाओं का परित्याग कर परमेश्वर की शरण में जाइए।

सभी वस्तुओं में ईश्वर की व्यापकता का भान कीजिए। अपने से छोटों के प्रति दयालु तथा कारुणिक बनिए, अपनी बराबरी वालों के प्रति मैत्री की भावना रखिए तथा अपने से बड़े लोगों के प्रति आदर का भाव रखिए।

वैराग्य-धन का अर्जन कीजिए। आत्मानन्द के द्वारा अपने मन को शीतल बनाइए। वासना-क्षय तथा तत्त्वज्ञान से प्राप्त मन की शान्ति के अमृत में आनन्द लूटिए। **स्वामी शिवानन्द**

सदाचार के वास्तविक आधार

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

उस परम सत्ता को श्रद्धापूर्ण प्रणाम है, जो समस्त प्राणी मात्र और समस्त मानव-परिवार मात्र को परस्पर जोड़ने वाला एकमात्र तत्त्व है। हम अन्य सभी पक्षों में एक-दूसरे से पूर्णतया भिन्न और विपरीत हो सकते हैं; किन्तु एक तत्त्व जो हम सबमें एक रूप से है, वह हमारे भीतर निवास करने वाली एकमात्र वास्तविक सत्ता है। ''आपके भीतर परमात्मा का निवास है। आपके भीतर अमर आत्मा स्थित है।'' **''एको देवः सर्वभूतेषु गूढः''** (केवल वह एक परमात्मा है जो प्राणी मात्र के अन्तर में स्थित है)। वही अन्तःस्थित सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा हम सबको एक-सा बनाता है।

यदि इस पर मनन किया जाये, इसे पहचाना जाये और धीरे-धीरे स्वयं को, सब अन्य प्रतीत होने वालों के साथ जोड़ने के आधार के रूप में इसे समझा जाने लग जाये, तो हम पायेंगे कि कोई 'अन्य' तो है ही नहीं। हमारे आध्यात्मिक स्वरूप के आन्तरिक वास्तविक स्वरूप की दृष्टि से देखा जाये, तो इस प्रकार कोई 'अन्य' नहीं है; क्योंकि हमसे अधिक या हमसे भिन्न ऐसा कुछ भी अन्य किसी में नहीं है जो हममें है। यदि हम समस्त प्राणी-वर्ग और परमात्मा द्वारा रची गयी सृष्टि के साथ स्वयं को जोड़ने का आधार यही बना लें, तब हम भगवान् के बनाये इस जगत् में एक संयोजक तत्त्व, एक सुदृढ़ शक्ति और एक सामंजस्यक सिद्धान्त बन कर जियेंगे।

हम वह नहीं हैं, जो हम दर्पण के समक्ष खड़ा होने पर स्वयं को देखते हैं। हम वह हैं, जो दिखायी नहीं देते, जो कि हम स्वयं को अनुभव करते हैं। और वह सभी में एक-समान है। वहह्वजो हम सबको एक बनाता हैह्वउसे हम भगवान्, अन्तरात्मा, सर्वात्मा कहते हैं।

यह सत्य एक भले जीवन का आधार है। दया और शिष्टाचार (भद्रता और सौजन्य) का वास्तविक आधार यही है। हमें दूसरों को सम्मान क्यों देना चाहिए? क्योंकि जिसकी हम पूजा-उपासना करते हैं, सबमें समान रूप से विद्यमान चैतन्य तत्त्व वही है। जब हम उनकी मन्दिर, मसजिद और गिरजाघर में आराधना करते हैं, तो जब वह जीते-जागते हमारे सम्मुख हों, तो उनका निरादर हम कैसे कर सकते हैं? जिससे हमें प्रसन्नता होती है, उसी से दूसरों को भी प्रसन्नता मिलेगी। जिससे हमें कष्ट होता है, वह दूसरों को भी कष्टदायी होगा। जो-कुछ भी हम अपने चतुर्दिक् के प्राणी मात्र से पाने के अभिलाषी हैं, वही अन्य सब भी अपने चतुर्दिक् से प्राप्त करने की आकांक्षा करते हैं।

अतः सदाचार, भलाई, दयालुता और करुणा का, अन्य सबके प्रति सहानुभूति, विनम्रता, शिष्टाचार और निष्कपटता का वास्तविक आधार वह आध्यात्मिक अनुभूति है, जो हमें ऐसी दृष्टि देती है और हमें यह उद्घाटित भी करती है कि भगवान् एक हैं और वह सर्वत्र विद्यमान हैं। वे कहते हैंह्वह्व''अपनी सृष्टि के रूप में सब ओर से मैं ही आपकी ओर आता

हूँ। आपके समक्ष अपनी सृष्टि मैंने इसीलिए रच कर रखी है कि आप मुझे कभी न भूलें, कि मैं आपसे कभी दूर न होऊँ, आपके लिए मैं अनभिज्ञ न रहूँ। आपके जीवन में सबसे अधिक परिचित वस्तु मैं हूँ; क्योंकि आप अपने सम्पूर्ण जीवन में, समस्त जगत् में प्रतिदिन केवल मुझे ही देखते हैं।''

हमारी यही दृष्टि उद्घाटित करने के लिए गुरुदेव का आगमन हुआ। उन्होंने हमें समस्त वस्तुओं के पीछे छिपे भगवान् को देखने और इसी सत्य को अपने जीवन का और जीवन-यापन का आधार बनाने की शिक्षा दी। ऐसा जीवन जीवन के प्रति सम्मान से और प्राणी मात्र के प्रति आदर-भाव से परिपूर्ण होगा। ऐसे जीवन में से मधुर, वांछित और सौन्दर्यपूर्ण मानवीय सम्बन्ध उत्पन्न होंगे।

समय की यही माँग है, आज के संसार की माँग भी यही है। बहुत से लोग जानते ही नहीं हैं कि व्यक्तिगत रूप से, सामूहिक रूप से अथवा अन्तर्राष्ट्रीय रूप से हमें परस्पर कैसे व्यवहार करना है। हमारा व्यवहार आध्यात्मिकता से विहीन है, हम परस्पर लड़ते-झगड़ते हैं। क्योंकि धर्म में से धर्म की आत्मा निकल कर जा चुकी है। हम केवल बाह्य रूप की पूजा करते हैं, आन्तरिक सार-तत्त्व का पूर्णतया अभाव है। इसीलिए आज संसार ऐसा हो गया है।

हम साधक व्यक्तिगत रूप से वही भूल करके वैसी ही दुर्दशा को प्राप्त न हों! क्योंकि भले ही हम संसार को परिवर्तित नहीं कर सकते; किन्तु स्वयं को परिवर्तित तो कर ही सकते हैं। हम जगत् के लिए केवल विलाप कर सकते हैं, उसके परिवर्तन के लिए कुछ भी नहीं कर सकते। तथापि हम असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, नश्वरता से अमरत्व की ओर तथा मानवता से दिव्यता की ओर अग्रसर होने के लिए सब-कुछ कर सकते हैं। यह हम कर सकते हैं और हमें अवश्यमेव करना चाहिए।

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

विस्तृत दृष्टिकोण रखिए

सेवा-परायण जीवन बिताइए। सेवा के लिए अपने हृदय को उत्साह तथा प्रेरणा से ओत-प्रोत कर डालिए। हर क्षण सर्वशक्तिमान् प्रभु को याद रखिए।

अपने चरित्र का निर्माण कीजिए। उचित व्यवहार कीजिए। दया, उदारता, सहानुभूति, सहनशीलता तथा नम्रता का विकास कीजिए। अपने अभिमान के छोटे से दायरे से निकल जाइए और विस्तृत दृष्टिकोण रखिए। शिष्टतापूर्वक विनीत तथा मधुर शब्दों का उच्चारण कीजिए। अनावश्यक कामनाओं तथा विचारों को नष्ट कर डालिए।

अपने आदर्शों, सिद्धान्तों तथा विचारों पर दृढ़तापूर्वक डटे रहिए। समस्त जगत् के विरोध करने पर भी अपने संकल्प से विचलित न होइए। सदाचार तथा दिव्य जीवन के सिद्धान्तों पर साहस के साथ डटे रहिए। एक गुरु के उपदेश का पालन कीजिए। आप परब्रह्म को प्राप्त करेंगे।

स्वामी शिवानन्द

परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

दक्षिण अफ्रीका के भक्तों के प्रेमपूर्ण आमन्त्रण के प्रतिभावह्लह्लउत्तर में द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने माह अगस्त के अन्तिम सप्ताह से नवम्बर २०१० के प्रथम सप्ताह तक की समयावधि में दक्षिण अफ्रीका की व्यापक यात्रा की।

श्री स्वामी जी २३ अगस्त २०१० को जोहानिसबर्ग में पहुँचे और हवाई अड्डे पर, डॉ. सन्दीप भाण, श्रीमती प्रिया भाण और अन्य भक्तों ने उनका स्नेहपूर्वक स्वागत किया। श्री स्वामी जी जोहानिसबर्ग में डॉ. भाण के निवास-स्थान में रहे और दिनांक ३० सितम्बर २०१० पर्यन्त उन्होंने भाण परिवार के उष्मापूर्ण आतिथ्य का आनन्द लिया।

जोहानिसबर्ग के उनके निवास की सम्पूर्ण अवधि में, स्वामी जी ने डॉ. भाण के गृह में, हर एक अपराह्न में सत्संग का परिचालन किया और भक्तों के साथ, अपने ज्ञानपूर्ण वचनों द्वारा वार्तालाप किया। श्री स्वामी जी ने सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के साथ स्वानुभवों का श्रवण कराया। श्री स्वामी जी ने स्व-प्रेरक प्रवचनों द्वारा द डिवाइन लाइफ सोसायटी की शाखा, 'शिवानन्द स्कूल ऑफ योग' के भक्तों तथा साधकों को प्रति शनिवार को आशीर्वादित भी किये।

श्री स्वामी जी दिनांक ३० सितम्बर २०१० को डर्बन, क्वॉझुलु नाटाल को गये और एक सप्ताह के लिए रिझर्वायर हिल्स के पास स्थित द डिवाइन लाइफ सोसायटी, दक्षिण अफ्रीका में रहे।

दिनांक १ अक्तूबर २०१० को, श्री स्वामी जी ने डर्बन के एक उपनगर, फिनिक्स के श्री गणेश-मन्दिर में, 'शिवानन्द शान्ति-स्तम्भ' (Sivananda Peace Pillar) का एक भव्य समारोह में उद्घाटन किया। सद्गुरुदेव के भक्तों के अतिरिक्त, राजा गुडविल झ्वेलेथिनी, रानी माफा झ्वेलेथिनी, मँगोसुथु बुथेलेझी और अनेक महानुभाव उपस्थित थे।

'रिचर्डस बे' में निवास करने वाले श्री ईश्वर रामलचमन जी, जो कि परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के महान् भक्त हैं, इस स्तम्भ की स्थापना के माध्यम भी वही थे।

श्री रामलचमन जी मुख्यालय आश्रम में अनेक बार आये और एक अवसर पर वे देहरादून में, परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज को मिले। इस मिलन में उन्होंने श्री स्वामी जी को कहा कि सम्पूर्ण दक्षिण अफ्रीका में आठ शिवानन्द-स्तम्भों की स्थापना के लिए वे दृढ़निश्चय थे। तद्उपरान्त तीन स्तम्भों की स्थापना करने में वे सफल रहे हैं। हम सद्गुरुदेव को अपनी प्रार्थनाएँ अर्पित करते हैं कि वे गुरुदेव की सेवा का संकल्प रख सकने में समर्थ हों, इस हेतु वे श्री ईश्वर रामलचमन जी को पूर्ण स्वास्थ्य, दीर्घ आयु और सुख-शान्ति से आशीर्वादित करें।

श्री स्वामी जी दक्षिण अफ्रीका के ला मेर्सी, पीटरमॅरिट्झबर्ग, स्टांगर और चाट्सवर्थ के आश्रमों में भी गये। हर स्थान पर श्री स्वामी जी का अत्यादर और भक्तिभावपूर्वक स्वागत हुआ और उनके नेतृत्व में सम्पन्न सत्संगों में भी विशाल उपस्थिति थी।

श्री स्वामी जी दिनांक ७ अक्तूबर २०१० को तटवर्ती स्थानों और प्रदेशों की ओर गये तथा मीयरबाँक में श्री शिवानन्द मुनिस्वामी जी के सुन्दर निवास-स्थान में दो सप्ताह पर्यन्त उन्होंने निवास किया। श्री शिवानन्द मुनिस्वामी जी द्वारा उखोझी कॉन्फरेन्स सेंटर पर दिनांक १० अक्तूबर २०१० को एक विशेष सत्संग आयोजित हुआ। उसमें दो सौ से अधिक भक्तों ने भाग लिया।

पीटरमॅरिट्झबर्ग के भक्तों की स्नेहपूर्ण विनंती के उत्तर में श्री स्वामी जी दिनांक १८ अक्तूबर को पीटरमॅरिट्झबर्ग गये और श्री प्रेम कान्तिलाल जी और रेणुका माता जी ने श्री स्वामी जी को अपनी प्रेमभरपूर सेवाएँ अर्पित करने का विशेष अवसर पाया। उनके गृह में एक सप्ताह पर्यन्त निवास के दौरान श्री स्वामी जी ने प्रति सन्ध्या सत्संग से भक्तों को आशीर्वादित किये।

श्री स्वामी जी दिनांक २५ अक्तूबर को जोहानिसबर्ग में दुबारा आये और डा. भाण जी के गृह में रह कर प्रति सन्ध्या को उन्होंने सत्संग परिचालित किये।

श्री स्वामी जी ने दिनांक १० नवम्बर को भारत की ओर प्रस्थान किया तथा मुख्यालय आश्रम के मध्य में, दो दिन दिल्ली में रह कर भक्तों को आशीर्वचन दिये।

श्री स्वामी जी महाराज की साउथ अफ्रीका की इस यात्रा ने, परम पूज्य गुरुदेव के भक्तों को संघटित होने में समर्थ किये तथा दिव्य जीवन के उज्ज्वल सन्देश-प्रसार में भी प्रचण्ड योगदान दिया। □

मुख्यालय आश्रम के साथ द डिवाइन लाइफ सोसायटी, सिडनी, ऑस्ट्रेलिया का ऑन-लाईन पारस्परिक सत्संग

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, सिडनी शाखा, ऑस्ट्रेलिया ने दिनांक ७ नवम्बर २०१० को श्री कारो रेड्डी जी और श्रीमती शमिल रेड्डी जी के निवास-स्थान पर मुख्यालय आश्रम के साथ अपना प्रथम पारस्परिक ऑन-लाईन सत्संग सम्पन्न किया। सिडनी, ऑस्ट्रेलिया के ५१ भक्तों ने सत्संग में उपस्थिति दी। उन्होंने इस सत्संग में परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, महासचिव, द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय के साथ सत्संग में, नूतन तकनीकों के किये गये उपयोगोंह्वह्वउदाहरणार्थ, कार्यक्रम के सन्दर्भ तथा आह्वान-मन्त्रों और भजनों की दिखायी गयी पावर-पॉईन्ट स्लाइड्स आदि का प्रसन्न हो कर आनन्द लिया।

पारस्परिक सत्संग की विचार-कल्पना का उद्भव कुछेक महीनों पूर्व हुआ जब द डिवाइन लाइफ सोसायटी, ऑस्ट्रेलिया के सदस्यों ने स्काईप सॉफ्टवेअर और इन्टरनेट द्वारा मार्गदर्शित ध्यान-सभाएँ आरम्भित कीं। इसका अधिक विकास तब हुआ जब श्री शंकर रामैया जी और श्रीमती जेसेल्ली शेर जी द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय, ऋषिकेश आये और परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज के सम्मुख इस विचार को प्रस्तुत किया। पश्चात्, श्री स्वामी यतिधर्मानन्द जी और श्री शंकर जी के तकनीकी सहाय से श्री स्वामी जी ने कुछेक ऑस्ट्रेलियन भक्तों के साथ सामूहिक वार्तालाप के आमन्त्रणह्वह्वकॉल के सक्रिय और जीवन्त निर्देशन में भाग लिया। स्काईप माध्यम के प्रभाव के ज्ञान से श्री स्वामी जी ने इस विचार को तथा कार्यक्रम को तत्काल आशीर्वाद दिये और अधिक विकास हेतु प्रोत्साहित किया।

उनकी ऑस्ट्रेलिया की वापसी पर श्री शंकर जी ने श्री गुणवन्त वाघेला जी के साथ सत्संग-प्रवचन में से वे क्या सम्पन्न करना चाहते हैं, इस विषयक विचार-विमर्श किया और श्री गुणवन्त जी ने प्रस्ताव रखा कि अगले मासिक सत्संग में, दिनांक ७ नवम्बर २०१०, रविवार को पारस्परिक सत्संग तुरन्त ही परिचालित किया जाये।

बुधवार को एक बार श्री स्वामी जी की प्राप्यता का अनुमोदन मिलते ही श्री स्वामी जी शिवानन्द आश्रम, भारत तथा सिडनी, ऑस्ट्रेलिया के भक्तों की, द डिवाइन लाइफ सोसायटी के प्रथम ऑनलाइन पारस्परिक सत्संग के लिए सुलभता हो गयी।

कमिटी के कुछेक सभ्य तथा द डिवाइन लाइफ सोसायटी, ऑस्ट्रेलिया के तकनीकी साधकों द्वारा मिलजुल कर, एक ही समय उचित कार्यक्रम और साधन आयोजित करने की तर्कसंगति आपस में हो गयी। इस कार्यक्रम हेतु यह निश्चित करना आवश्यक था कि सत्संग किसी भी ध्यान-भंग और बाधा-अवरोध के सिवा सरलता से सम्पन्न हो।

श्री विजय गोकर्ण की मदद से कार्यक्रम की रूपरेखा बना दी गयी, जब कि तकनीकी साधकों ने आवाज़-पद्धतिह्वह्वसाउन्ड-सिस्टीम, प्रोजेक्टर और इन्टरनेट के संयोजन की ओर ध्यान दिया।

कार्यक्रम को पावर-पॉईन्ट स्लाईड्स के उपयोग द्वारा साँग-बुक्स (Song Books) की आवश्यकताओं को टाल कर दीवार पर प्रक्षेपित किया गया।

उस दिन अपराह्न में तीन बजे श्री शंकर जी ने मुख्यालय आश्रम के ब्रह्मचारी श्री शुद्ध चैतन्य जी और श्री स्वामी निश्चलानन्द जी के साथ संयोजन का परीक्षण प्रारम्भ किया। वायरलेस टेक्नॉलॉजी द्वारा प्रतिबन्धित कुछेक चिन्तातुर क्षणों के पश्चात् मुख्य कम्प्यूटर का संयोजन हुआ और एक सफल परख-परीक्षण किया गया।

जैसे ही भक्तों का आगमन शुरू हुआ कि कक्ष में उत्तेजना व्याप्त हो गयी, क्योंकि थोड़े ही भक्तों को परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज के स्काईप द्वारा दर्शन विषयक ज्ञान था।

जब सत्संग का प्रारम्भ हुआ तब कक्ष आध्यात्मिक ऊर्जा से व्याप्त हो गया और उसकी हरएक ने अनुभूति की। हमने अपराह्न के ४-३० बजे (भारतीय प्रमाण समय पूर्वाह्न में ११-००) के निश्चित किये गये समय को साध लिया। भक्त गण श्री स्वामी जी के दर्शन की आतुरतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहे थे। विजय गोकर्ण 'श्री राम जय राम जय जय राम' का कीर्तन सम्पन्न करा रहे थे कि विशाल पर्दे पर निज दर्शन द्वारा श्री स्वामी जी ने सम्मिलित भक्तों को आशीर्वादित किया। श्री स्वामी जी भी कीर्तन में शामिल हुए और भक्तों के मध्य श्री स्वामी जी की उपस्थिति ने उन्हें उत्साह और भक्ति से भर दिया।

श्री स्वामी जी ने एकत्रित भक्तों का अभिवादन किया और श्री शंकर जी को कैमरा चक्राकार घुमाने की विनन्ती की जिससे वे सम्पूर्ण निरीक्षण कर सकें। उन्होंने हॉल के कुछेक भक्तों के साथ बात की और इस सम्पूर्ण अवसर की महिमा समझायी। श्री स्वामी जी ने इस टेक्नॉलॉजी के उपयोग द्वारा द डिवाइन लाइफ सोसायटी के परिवार के अन्य सभ्यों पर्यन्त पहुँचने के और गुरुदेव के सन्देश को प्रसारित करने के नये अवसर हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं, यह भी कहा।

पश्चात् स्वामी जी ने 'ईशावास्य उपनिषद्' के प्रथम श्लोक विषयक तथा उसे हमारे दैनिक जीवन में किस प्रकार आचरित किया जाये, इसके लिए सत्संग को सम्बोधित किया। श्री स्वामी जी ने सत्संग में 'श्री राम जय राम जय जय राम' कीर्तन के कुछ आवर्तनों का नेतृत्व किया, सत्संग तथा द डिवाइन लाइफ सोसायटी के सब सदस्यों को आशीर्वादित किया और अपने प्रवचन का समापन किया।

सत्संग, श्री हनुमान-चालीसा का पाठ तथा उत्तरार्ध प्रार्थनाओं पर्यन्त, चलता रहा। प्रसाद-वितरण हुआ। यद्यपि श्री स्वामी जी के दर्शन इन्टरनेट तथा स्काईप के माध्यम से प्रथम बार ही प्राप्त हुए, तथापि सब भक्त प्रसन्न थे। सबको विश्वास हो गया कि इन्टरनेट टेक्नॉलॉजी का उपयोग अत्यन्त सकारात्मक और आशास्पद है तथा युवा-पीढ़ी में गुरुदेव के मिशन तथा आध्यात्मिकता हेतु रुचि उत्पन्न करेगा।

अगले स्काईप-सत्संग की सम्पन्नता के समय विषयक विचारणा के पश्चात् सत्संग समाप्त हुआ।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी की सिडनी, ऑस्ट्रेलिया स्थित शाखा श्री उदित राम जी और असाई पेरूमल द्वारा साप्ताहिक योग-वर्ग, श्रीमती डॉ. आशा गुप्ता माता जी द्वारा बालकों हेतु हिन्दी भाषा के वर्ग और श्री सुशील कुमार जी और श्री कारो रेड्डी जी द्वारा स्काईप मार्गदर्शित ध्यान-वर्ग परिचालित करती है।

□

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

... श्री गुरुदेव के गहन आशीर्वाद से द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय, लक्ष्मणझूला के निकट तपोवन में स्थित 'शिवानन्द होम' के माध्यम से विनम्र सेवा में निरन्तर निरत है। यह 'होम' ऐसे बेघरबार निर्धन रोगियों को चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध करता है, जिन्हें बीमार होने के कारण इलाज के लिए भरती किये जाने की आवश्यकता है, किन्तु साधन-विहीन होने के कारण असमर्थ हैं। रोग की प्रकृति एवं स्थिति के अनुसार हो सकता है कि कभी थोड़े समय के उपचार की आवश्यकता हो, किन्तु अधिकांश रूप से लम्बे समय तक चिकित्सा की ही आवश्यकता रहती है। प्रायः यह होता है कि किसी दीर्घावधि रोग की पूर्णतया उपेक्षा की जा रही होती है और इसके साथ ही संक्रामक बुखार, कृमि-सन्दूषण, रक्ताल्पता अथवा त्वचारोग इत्यादि जैसे कष्ट भी आक्रमण कर देते हैं, जिसके परिणामवश रोगी को दोनों ही कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा चिकित्सा भी दोनों ही कष्टों की करनी होती है।

'शिवानन्द होम'ह्वह्वएक 'होम' (घर) है। बेघरबार लोगों के लिए घर। चार दीवारें होने से एक मकान या निवास-स्थान तो बन जाता है, किन्तु 'घर' इससे कुछ अलग, कुछ अधिक होता है; यह चार-दीवारी मात्र नहीं होता। कई बार लोग अपने ही निवास-स्थान में रहते हुए भी 'बेघर' होते हैं और कई बार अपना मकान न होते हुए भी आवश्यक नहीं कि वह व्यक्ति बेघर हो। जिस जगह रहने से मन को शान्ति, आराम, अपनत्व, आधार, सुरक्षा और आश्रय की अनुभूति हो, उसे 'घर' कहा जा सकता है। अन्यथा ऐसे लोग भी मिलते हैं जिन्हें अपने ही निवास-स्थान से निकल जाना पड़ता है, क्योंकि वहाँ अब उनका सम्मान नहीं है, प्रत्युत किसी रोग के कारण, किसी मानसिक अथवा शारीरिक अक्षमता के कारण पराश्रित हो जाने के कारण अब वह एक 'भार' माने जाने लगे हैं। दूसरी ओर आपको 'शिवानन्द होम' में ऐसे लोग मिलेंगे जो लघुकालीन रोग की चिकित्सा के लिए आने पर भी इसे 'अपना घर' मानने लगते हैं। कई बार ऐसे लोगों को 'वापस अपने घर चले जाओ' कहना अत्यन्त कठिन हो जाता है, जब अपने घर में रहते हुए भी उनकी स्थिति 'बेघर' जैसी हो! कई बार गहन एकाकीपन की समस्या को एक ओर हटा फेंकना इतना सरल नहीं होता। तिरस्कृत किये जाने की वेदना, अस्तित्व-विहीनता की भावना, किसी के भी लिए किसी भी समय 'कुछ भी न होने' का कष्ट, पूर्णतया भुला दिये जाने की पीड़ाह्वह्वइन सबकी उपेक्षा कर देना इतना सरल नहीं है।

किन्तु उस प्रौढ़ महिला के साथ इस प्रकार का कुछ घटित नहीं हुआ था। वह तो आश्रम की ओर जाने वाली सड़क के किनारे, सहायता के लिए चीखती-चिल्लाती, क्षत-विक्षत दशा में पड़ी पायी गयी थी। राहगीरह्वगुण्डों ने उसे पत्थर मार-मार कर घायल कर दिया था। भरती कर लिये जाने के पश्चात् ज्ञात हुआ कि उसे अतीत का कुछ भी स्मरण नहीं था। वह गढ़वाली भाषा बोल रही थी, किन्तु अपने घर-परिवार और निवास-स्थान के सम्बन्ध में कुछ भी

बता पाने में असमर्थ थी। कुछ दिन इसी प्रकार व्यतीत हो गये। उसकी विस्मृति यहाँ तक थी कि उसे स्नानघर अथवा अन्य किसी स्थान का भी स्मरण नहीं रहता था। दश दिनोंह्वके पश्चात् अन्ततः उसके परिवार के सदस्य आ पहुँचे, जो कि गत तीन सप्ताह से उसे खोज रहे थे। गत कुछ समय से वह ऐसे मानसिक रोग से ग्रसित थी कि कुछ याद नहीं रख पाती थी। ऐसी ही स्थिति में एक दिन बिना किसी से कुछ भी कहे, घर से निकल पड़ी और फिर पुनः लौटने का मार्ग भूल गयी। घर के लोग अत्यन्त प्रेमपूर्वक उसे मिले और प्रसन्नतापूर्वक ले गये। प्रार्थनाएँ की गयीं। स्वागतोत्सव मनाया गया। प्रभु के धन्यवाद के गीत गाये गये जिन्होंने अपने बिछुड़े बच्चों को पुनः मिला दिया।

ॐ श्री राम जय राम जय जय राम!

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।''　　***स्वामी शिवानन्द***

मुख्यालय आश्रम में दीपावली-पर्व, गो-पूजा और गोवर्धन-पूजा

''ब्रह्म में अवस्थित हो कर दीपावली-पर्व मनाओ और आत्मा का शाश्वत परमानन्द अनुभूत करो।'' *(सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज)*

दीपावली का पावन दिवस मुख्यालय आश्रम में दिनांक ५ नवम्बर २०१० को अत्यानन्द और आध्यात्मिक उत्साह से मनाया गया। दीपों के इस उज्ज्वल पर्व के अवसर पर सम्पूर्ण आश्रम बहुरंगी बल्ब और मिट्टी के हजारों दीपों द्वारा जगमगाया गया था। समृद्धि तथा शुभम्कारी देवी लक्ष्मी माता की, सुन्दर, सुशोभित श्री समाधि-मन्दिर के हाल में, रात्रि-सत्संग में विशेष पूजा सम्पन्न हुई। नियमित मन्त्रोच्चारण के आधिक्य में, देवी माता के भक्तिपूर्ण कीर्तन और 'कनकधारा स्तोत्र' का पाठ किये गये। द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज के इस पावन अवसर पर आशीर्वचन हुए। श्री स्वामी जी महाराज द्वारा सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के 'दीपावली-सन्देश' का पठन किया गया। पश्चात् देवी माता की अष्टोत्तरशत नामावली द्वारा पुष्पार्चना हुई। आरती और विशेष प्रसाद के साथ सत्संग का समापन हुआ।

अगले दिन, ६ नवम्बर को, आश्रम की 'विश्वनाथ-गोशाला' में गो-पूजा और गोवर्धन-पूजा सम्पन्न हुई। समृद्धि-वैभव की देवी, लक्ष्मी माता के प्रकट-व्यक्त स्वरूप गायों की पूजा की गयी और उन्हें खाद्य-पदार्थ दिये गये। आश्रम के संन्यासी और ब्रह्मचारियों ने इस पावन उत्सव में भाग लिया। परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज पूजा में उपस्थित रहे और उन्होंने उस पवित्र दिवस का महत्त्व समझाते हुए प्रवचन दिया। गो-माता, श्री कृष्ण भगवान् की आरती और प्रथागत भोज के साथ उत्सव की पूर्णाहुति हुई।

प्रकाश का प्रकाश परमोच्च परमात्मा और सद्गुरुदेव, हमारी प्रार्थनाह्वह्व'तमसो मा ज्योतिर्गमय'ह्वह्व की पूर्ति करें।

* * *

मुख्यालय आश्रम में श्री स्कन्द-षष्ठी महोत्सव

''श्री स्कन्द अवतार का महत्त्व और इस अवतार में मूर्त तथा सम्मिलित आध्यात्मिक सन्देश मानव की आत्म-शरणागति का सर्वोच्च उपदेश तथा सच्ची प्रार्थना और ईश्वर की अबाध, सुनिश्चित करुणा की प्रभावोत्पादकता है।''

(सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज)

श्री स्कन्द-षष्ठी का शुभ पर्व मुख्यालय आश्रम में दिनांक ७ नवम्बर से १२ नवम्बर २०१० पर्यन्त अति पवित्रता तथा अपूर्व आध्यात्मिक सफलता सहित मनाया गया। भजन-हाल में स्कन्द भगवान् का मन्दिर पूजा का स्थल था। प्रथम पाँच दिनावधि में भगवान् की आराधना, अभिषेक (भगवान् के विग्रह की स्नान-विधि), अलंकारम् (आभूषणों से सजावट), वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ पुष्पों से अर्चना और भजन-कीर्तन द्वारा हुई। भव्य आरती और विशेष प्रसाद द्वारा उत्सव का समापन किया गया। प्रति सायंकाल स्कन्द भगवान् की महिमा-वर्णित भजन-कीर्तन का गान हुआ।

दिनांक १२ नवम्बर, स्कन्द-षष्ठी को पावन गंगा-मैया के तट पर, गणेश-मन्दिर से, कीर्तन के साथ कावडी-यात्रा आरम्भित हो कर भजन-हाल में, उत्साहपूर्ण स्वागत से समाप्त हुई। पश्चात्, भगवान् का भव्य अभिषेक प्रारम्भ हुआ, जिसमें सब संन्यासी, ब्रह्मचारी, साधक और आश्रम के अतिथि-अभ्यागत व्यक्तिगत रूप से प्रतिभागी हुए। श्री स्कन्द भगवान् के श्रीविग्रह को चन्दन-विलेपन और रंगबिरंगे फूलों का भव्य सुशोभन सम्पन्न हुआ। सहस्र नामावली सहित पुष्पार्चना और आरती हुई।

षण्मुख श्री स्कन्द भगवान् के प्रतिनिधि समान छह कुमारों की पूजा हुई तथा उन्हें भोजन, उपहार और दक्षिणा प्रदान की गयी। पवित्र प्रसाद के साथ आराधना का समापन हुआ। रात्रि-सत्संग में, नियमित प्रार्थनाओं तथा स्तोत्र-पाठ के आधिक्य में, द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय के महासचिव, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने श्री स्कन्द भगवान् के दिव्य अवतरण, उनकी लीला तथा उनकी आराधना के महत्त्व-विषयक प्रवचन दिया।

श्री स्कन्द भगवान् और सद्गुरुदेव के, हमारे अज्ञान-रूपी आसुरी तत्त्वों के साथ हमारे संघर्ष में भव्य विजय के लिए आशीर्वाद हों।

६६ वें बेसिक योग-वेदान्त कोर्स का समापन-समारोह (सितम्बर-अक्तूबर २०१०)

मुख्यालय आश्रम की योग-वेदान्त फॉरेस्ट एकाडेमी के प्रवचन-हाल में, शनिवार दिनांक ३० अक्तूबर २०१० को, ६६ वें बेसिक योग-वेदान्त कोर्स का समापन-समारोह सम्पन्न हुआ। मंगलाचरण के पश्चात् एकाडेमी के कुल-सचिव श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने उस अवसर पर उपस्थित सबका स्वागत किया। पश्चात् प्रोफेसर श्री राजेन्द्रकुमार भारद्वाज जी ने कोर्स की रिपोर्ट पढ़ी। तदुपरान्त कुछेक विद्यार्थियों ने पूर्ण किये गये कोर्स विषयक अपने भाव-विचार व्यक्त किये। उसके अनुसरण में विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र वितरण और प्राध्यापक-वर्ग का सम्मान सम्पन्न हुए।

श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने विद्यार्थियों को आशीर्वचन दिये। अपने सन्देश में उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों ने इस कोर्स के दौरान जो भी शिक्षा

पायी, उसे अपने दैनन्दिन जीवन में वे आचरित करें। स्वामी जी महाराज ने सलाह दी कि वे निम्नतर मन से सम्मोहित न हों, क्योंकि वह तो सदैव इन्द्रियजन्य आनन्द में प्रवृत्त होना, लिप्त होना चाहता है। सदा उच्चतर मन के आदेशों का अनुसरण करें, कारण कि वह सदा उचित सलाह देता है। जब भी मन में कोई अनुचित, निम्नस्तर के विचार आते हैं, तब अन्तरात्मा की आवाज़ हमेशा पूर्व ही सचेत करती है। उस आवाज़ को सुन कर उस पर ध्यान देना है।

स्वामी जी ने गुरुदेव के एक गीत Doctrine of a little का उल्लेख किया और समझाया कि गीत के दो भाग हैं। पहला भाग, ''थोड़ा-सा खाओ, थोड़ी-सी निद्रा लो'' इस सन्दर्भ में है कि जो अल्प प्रमाण में ही किया जाये, क्योंकि उसके सिवा कोई जी नहीं सकता, अर्थात् अपरिहार्य है। दूसरा भाग, ''थोड़े आसन करो, थोड़ा जप करो,'' आरम्भ में थोड़ा सा आचरित किया जाये, किन्तु क्रमिक रूप से उत्तरोत्तर बढ़ाया जाये।

श्री स्वामी जी महाराज ने कहा कि संयमित जीवन साधना में सफल होने के लिए आवश्यक है, जिसमें उच्चतर मन, निम्नतर मन पर वर्चस्व कर लेता है। अतः दैनिक आत्मनिरीक्षण अनिवार्य है। गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने कहा है कि शरीर से सम्बद्ध सब निम्न कक्षा की गतिविधियों की सम्पन्नता एकदम अल्प प्रमाण में होनी चाहिए तथा साधना के उच्चतर पहलुओं को हमारे दैनिक कार्यक्रम में उचित स्थान देना चाहिए। यह है दिव्य जीवन की मुख्य रूपरेखा। अधिक में, स्वामी जी ने कहा कि मन में जिस किसी अनिच्छनीय तत्त्व की खोज हमें होती है तब उसे उचित सिद्ध नहीं करना चाहिए एवं उसके लिए कारण प्रस्तुत न करके, उसे वश में लाने के लिए उचित पद्धतियों की योजनाएँ बनानी चाहिए।

स्वामी जी ने उपस्थित सब पर परमात्मा तथा गुरुदेव के आशीर्वादों का आह्वान किया। सरस्वती-पूजा और प्रसाद-वितरण के साथ समारोह का समापन हुआ।

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज अपनी सांस्कृतिक यात्रा के अन्तर्गत दिनांक २९ अक्तूबर, २०१० को गुजरात राज्य में गये। उनकी यह यात्रा दिव्य जीवन संघ, वडोदरा शाखा के हीरक महोत्सव के उपलक्ष्य में सम्पन्न हुई। इस शाखा का प्रारम्भ परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने वर्ष १९५० में निज अखिल भारत और सिलौन की यात्रावधि में किया। हीरक महोत्सव के अन्तर्गत दिव्य जीवन संघ, वडोदरा शाखा तथा गुर्जर दिव्य जीवन संघ समिति ने संयुक्त रूप से वडोदरा में तीन दिवसीय १० वीं गुजरात दिव्य जीवन संघ की परिषद् आयोजित की थी। इस परिषद् के हेतुओं में आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार, स्व-जागृति और विश्व-शान्ति समाविष्ट थे। यह परिषद् दिनांक ३० अक्तूबर से दिनांक १ नवम्बर की समयावधि में सम्पन्न हुई। परिषद् का विषय था : ''आपके दिव्य स्वभाव की जागृति में सतत स्थित रहो।'' गुजरात की समस्त शाखाओं तथा अन्य राज्यों की शाखाओं में से प्रतिनिधियों ने परिषद् में भाग लिया। अनेक सन्त तथा सुप्रसिद्ध विद्वानों और वक्ताओं ने भी स्व-वक्तव्य से परिषद् की शोभा बढ़ायी।

श्री स्वामी जी महाराज परिषद् में तीन दिन उपस्थित रहे। स्वामी जी महाराज ने मंगल प्रारम्भिक सत्र में भाग लिया। स्वामी जी महाराज ने भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत स्टडी-सेन्टर (स्वामी

शिवानन्द स्टडी-सेंटर इन् स्पिरिच्युअल एण्ड कल्चरल हेरिटेज ऑफ इंडिया) एवं एम.एस. युनिवर्सिटी, वडोदरा की फॅकल्टी ऑफ आर्ट्स की संयुक्तता में आयोजित एक परिसंवाद में भी भाग लिया और 'विज्ञान तथा आध्यात्मिकता में सुसंवादिता साधने की कला' विषयक प्रवचन दिया। 'योग ऑफ सिन्थेसिस (इंट्रीगल योग) समन्वय योग' के विषय में आयोजित सत्र में वे अध्यक्ष थे तथा उन्होंने उस विषयक प्रवचन दिया। स्वामी जी महाराज ने द्वितीय तथा तृतीय दिवसों को, परिषद् के प्रतिनिधियों को ब्राह्ममुहूर्तीय सन्देश भी दिया। समापन-सत्र में श्री स्वामी जी महाराज ने समापनयुक्त निज सन्देश दिया। परिषद् भव्य रूप से सफल रही और सब भक्तों और विशेष रूप से गुजरात के भक्तों के लिए महान् प्रेरणादायक रही।

श्री स्वामी जी महाराज दिनांक २० और २१ नवम्बर को दो दिवसीय, उत्तर भारतीय क्षेत्रीय (झोनल) आध्यात्मिक परिषद् में निज उपस्थिति देने, दिनांक १५ नवम्बर को पटियाला, पंजाब गये। दिव्य जीवन संघ, पटियाला शाखा ने इस परिषद् का आयोजन किया था। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, चण्डीगढ़, राजस्थान और महाराष्ट्र की शाखाओं के प्रतिनिधियों ने इस परिषद् में भाग लिया। परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के उपदेशों का प्रसार और युवा-जागृति, इस परिषद् के हेतु थे। स्वामी जी महाराज परिषद् में उपस्थित रहे। दिनांक २० का शुभारम्भ सत्र शालेय और कॉलेज के छात्रों तथा युवाओं के लिए था और स्वामी जी महाराज ने उनको अपने प्रवचन से सम्बोधन किया। स्वामी जी महाराज ने प्रतिभागी छात्रों के प्रश्नों के उत्तर भी दिये। स्वामी जी महाराज ने परिषद् के प्रतिनिधियों को 'युवा-जागृति' विषयक व्याख्यान दिया। परिषद् अत्यन्त सुआयोजित, भव्य सफलता थी और सभी प्रतिभागियों के लिए अति सुखद, आनन्ददायक और सन्तोषदायक रही।

श्री स्वामी जी महाराज दिनांक २२ नवम्बर को पुनः गुजरात राज्य में गये। स्वामी जी महाराज ने भावनगर में, दिनांक २३ को, पूजा के पश्चात्, दिव्य जीवन संघह्रह्रभावनगर शाखा के शिवानन्द आश्रम की सूचित इमारत, 'शिवानन्द भवन' का शिलान्यास सम्पन्न किया। शाखा ने, अद्य-प्राप्त भूमि पर स्थानान्तरण किया है और शाखा की गतिविधियाँ सुविधापूर्वक और प्रभावी रीति से सम्पन्न करने हेतु इमारत के निर्माण की सूचित योजना है। पूज्य श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी महाराज, शाखा के अध्यक्ष, शाखा के कार्यालय के माननीय सब कर्मचारी-गण, विभागीय पद-संचालक और भक्त-गण उपस्थित रहे। स्वामी जी महाराज ने सायंकाल के जाहीर सत्संग में प्रवचन दिया। भक्तों में अनन्य उत्साह और भाव थे तथा शाखा के भवन के शीघ्र निर्माण हेतु उनका दृढ़ निश्चय था। स्वामी जी महाराज ने भावनगर के कुछेक भक्तों के थोड़े व्यक्तिगत कार्यों-समारोहों में भी निज उपस्थिति दी।

चण्डीगढ़ शाखा में स्ट्रेस-प्रबन्धन कोर्स

द डिवाइन लाइफ सोसायटी की चण्डीगढ़ शाखा के अनुरोध पर श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज ने मुख्यालय की ओर से २३ नवम्बर से २५ नवम्बर २०१० तक एक तृदिवसीय स्ट्रेस-प्रबन्धन कोर्स का संचालन किया। यह कोर्स युवाओं तथा वयस्कों के लिए आयोजित किया गया था। लगभग २५ व्यक्तियों ने इस

कोर्स में भाग लिया। इस कोर्स में प्रतिदिन ३ घण्टों तक प्रतिभागियों को योगनिद्रा (योगिक शिथिलीकरण की एक तकनीक) तथा अजपाजप ध्यान की तकनीकों का अभ्यास कराया गया। अभ्यास कराने से पूर्व स्ट्रेस तथा ध्यान के सैद्धान्तिक पक्षों पर भी चर्चा की गयी। इस बात पर बल दिया गया कि स्ट्रेस का प्रतिकारक (antidote) आध्यात्मिक जीवन ही है। उपर्युक्त तकनीकों के 'क्यों और कैसे' पक्षों का भी विस्तार से विवेचन किया गया ताकि वर्तमान युग का बौद्धिक मन इन तकनीकों को स्वीकार कर सके।

प्रतिभागियों को इन तकनीकों का अभ्यास करने में सहायता प्रदान करने हेतु चण्डीगढ़ शाखा ने इस कार्यक्रम की एक डी.वी.डी. तैयार की है।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी की शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

अहिवारा (छत्तीसगढ़): अक्तूबर २०१० की अवधि में शाखा ने दैनिक सत्संग, प्रति एकादशी को सामूहिक महामृत्युंजय मन्त्र का जप, पितृपक्ष में श्रीमद् भगवद्गीता-स्वाध्याय तथा विशेष गतिविधियों में श्रीकृष्ण-जयन्ती को ६ घण्टे अखण्ड जप, शिवानन्द-जयन्ती को पादुका-पूजा, चिदानन्द-जयन्ती को तथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि पर सामूहिक जप आदि गतिविधियाँ पूर्ण की।

अम्बाला (हरियाणा): प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग और प्रति मंगलवार को श्री हनुमान चालीसा के पाठ आदि नियमित गतिविधियों के उपरान्त, दिनांक १४ अक्तूबर को साढ़े तीन घण्टों का विशेष सत्संग, दो होमियोपैथिक औषधालयों द्वारा एवं जल-सेवा द्वारा समाज-सेवा भी सम्पन्न की गयी।

बड़कुँआल (उड़ीसा): शाखा की नियमित गतिविधियाँ ह्वह्व प्रभात में स्तोत्र-पाठ द्वारा दैनिक द्विवार पूजाएँ, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र पारायण और श्रीमद् भागवतम् का स्वाध्याय सायंकाल में, प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा और साप्ताहिक सत्संग। विशेष गतिविधियाँ ह्वह्वशिवानन्द-जयन्ती और चिदानन्द-जयन्ती को प्रभात में प्रार्थनाएँ, पूर्वाह्न में पादुका-पूजा, श्रीमद् भगवद् गीता पारायण तथा सान्ध्य-सत्संग।

बेंगुलूरु (कर्नाटक): साप्ताहिक सत्संग प्रति गुरुवार को; प्रति शुक्रवार को मातृ-सत्संग स्तोत्र-पाठों के सहित; प्रति माह एक मन्दिर में सत्संग में भव्य अभिषेकम् और स्वाध्याय; तृतीय रविवार को ३ घण्टों का अखण्ड कीर्तन, भक्ति-संगीत चतुर्थ रविवार को आदि नियमित रूप से होने वाली गतिविधियों के अतिरिक्त, आराधना-दिन को ४ दिवसीय कार्यक्रमों में भजन, नृत्यनाटिका, आध्यात्मिक प्रवचन और पादुका-पूजा सहित विशेष सुशोभन, आध्यात्मिक प्रवचन, पुस्तक-विमोचन, २३ अकिंचन कन्याओं को रु. २०,०००/- का दान, साधु-भिक्षा, नारायण-सेवा, भोग-प्रसाद और भजन-सन्ध्या। परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि को भजन, विडियो-दर्शन, भक्तों द्वारा वक्तव्य। शिवानन्द-जयन्ती को भजन, विडियो-दर्शन, वक्तव्य। चिदानन्द-जयन्ती को विशेष सत्संग और पुस्तक-विमोचन आदि विशेष कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

बरबिल् (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँ ह्वह्वप्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग, प्रति सोमवार को चल-सत्संग, सितम्बर में ४५० मरीजों को शिवानन्द होमियोपैथिक औषधालय द्वारा दवाइयों का प्रदान। विशेष गतिविधियाँ ह्वह्व(१) श्रीकृष्ण-जयन्ती : दिनभर का कार्यक्रम और विशेष पूजा। (२) पुण्यतिथि : ब्राह्ममुहूर्त से ले कर रात्रिपर्यन्त प्रार्थना-ध्यान, पादुका-पूजा, निर्धनों को अन्न, ब्राह्मण-भोजन तथा सत्संग। (३) शिवानन्द-जयन्ती : आध्यात्मिक कार्यक्रम दिनभर के। (४) चिदानन्द-जयन्ती : पूर्ण दिन के आध्यात्मिक कार्यक्रम। निर्धनों को अन्न-दान और वस्त्र-दान भी किये गये। (५) गीता-ज्ञान-सत्र : माह सितम्बर के दिनांक १८ से दिनांक २४ पर्यन्त भगवद् गीता पर प्रवचन।

बारिपदा (उड़ीसा): दिनांक ३ अक्तूबर को शाखा का

मासिक साधना-दिन, कुष्ठरोगियों की एक संस्था में ७७ अन्तेवासियों को दवाईयों और अन्न का वितरण। दिनांक ३१ अक्तूबर को एक अनाथालय में बालकों को बिस्कुटों का वितरण।

बौध (उड़ीसा): साप्ताहिक सत्संग, प्रति माह के अन्तिम रविवार को पादुका-पूजा और सान्ध्य-सत्संग के आधिक्य में शाखा ने विशेष रूप से श्रीकृष्ण-जयन्ती, श्री गुरुपूर्णिमा, शिवानन्द-जयन्ती को प्रभात में पादुका-पूजा और सायंकाल में विशेष सत्संग, चिदानन्द-जयन्ती को नारायण-सेवा और प्रसाद-सेवन।

बल्लारि (कर्नाटक): दैनिक पूजा और सत्संग के अतिरिक्त शाखा ने प्रति रविवार को तथा विजयादशमी को पादुका-पूजा की सम्पन्नता की। दिनांक २८ अक्तूबर को प्रतिष्ठा-महोत्सव मनाया गया।

भोंगीर (आन्ध्र प्रदेश): शाखा ने श्री गणेश चतुर्थी, शिवानन्द-जयन्ती और चिदानन्द-जयन्ती मनाने हेतु विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया।

बीकानेर (राजस्थान): नियमित गतिविधियाँह्वह्व दैनिक सत्संग, मातृ-सत्संग (मासिक द्विवार), शिवानन्द दिवस को पादुका-पूजा और भजन-कीर्तन, चिदानन्द-दिन को यज्ञ और भजन-कीर्तन आदि, योगासन-वर्ग, शिवानन्द पुस्तकालय और निर्धन विद्यार्थियों को आर्थिक सहाय। विशेष गतिविधियाँह्वह्व (१) नवरात्रि-पूजा : कन्याओं की पूजा और उन्हें भोजन कराया गया। (२) श्रीमद् भागवत सप्ताह : नवरात्रि के प्रथम दिवस से आरम्भित और महा-अष्टमी को समापन-यज्ञ, ब्राह्मण-भोजन, भण्डारा। (३) विजयादशमी। (४) श्रीमती खतूरिया जी के दिवंगत आत्मा को प्रार्थना-सभा में श्रद्धा-सुमनों का अर्पण।

चंडीगढ़ : दैनिक सत्संग, योगासन-वर्ग, प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, ३०० से अधिक लोगों को भण्डारा, लगभग ५० मरीजों का निःशुल्क मेडिकल परीक्षण और दवाइयों का वितरण। विशेष गतिविधियाँह्वह्व (१) श्रीकृष्ण-जयन्ती; (२) शिवानन्द-जयन्ती : पादुका-पूजा और महामृत्युंजय मन्त्र-जप; (३) चिदानन्द-जयन्ती : पादुका-पूजा, २४ घण्टों का अखण्ड जप; (४) दिनांक १९ सितम्बर को वेदान्त पर आध्यात्मिक प्रवचन।

चिकिटि (उड़ीसा): शाखा ने दिनांक अक्तूबर २, ३, ४ को ३ दिवसीय साधना-शिविर का आयोजन नौपाडा के वानप्रस्थाश्रम के स्थापना-दिन के उपलक्ष्य में किया। अन्तेवासियों की दैनिक चर्या में ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान सभा, योगासन-प्राणायाम की सम्पन्नता, गीतापाठ, भगवद्गीता के स्वाध्याय के साथ-साथ Bliss Divine, Gandhian Thought, श्रीमद् भागवतम् और श्री रामायण के स्वाध्याय, मन्त्र-लेखन, कर्मयोग, भजन-कीर्तन और स्व-विश्लेषण आदि सम्पन्न होते हैं।

दिगपहंडी (उड़ीसा) : माह के प्रति गुरुवार और रविवार को सत्संग, शिवानन्द-दिवस और चिदानन्द-दिवस को पादुका-पूजा के अतिरिक्त शाखा ने दो स्थानिक पाठशालाओं में आदरणीय श्री स्वामी रामकृपानन्द जी के प्रवचन और योगासन-प्राणायाम के निर्देशन-वर्ग आयोजित किये।

फ़रीदपुर (उत्तर प्रदेश): नियमित रूप से शाखा ने प्रथम और द्वितीय बुधवार को स्वाध्याय-सहित, भजन-कीर्तन और ध्यान-सहित तृतीय बुधवार को और चतुर्थ बुधवार को 'साधना' सहित साप्ताहिक सत्संग; श्री रामचरित मानस का मासिक पारायण और समापन में पूजा; प्रति पूर्णिमा को हवन आदि सम्पन्न किये तथा नवरात्रि को विशेष पूजा और आरती की पूर्णता हुई।

घटपदमुर, जगदलपुर (छत्तीसगढ़): दैनिक ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान सभा; पूर्वाह्न में स्तोत्र-पाठ, पूजा और योगासन-वर्ग; दैनिक सान्ध्य-कीर्तन और सत्संग; प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा, प्रति शनिवार को और प्रति रविवार को स्तोत्र-पाठ आदि गतिविधियों के अतिरिक्त विशेष गतिविधियों में (१) श्रीकृष्ण-जयन्ती, (२) शिवानन्द-जयन्ती, (३) श्री गणेश उत्सव, (४) चिदानन्द-जयन्ती, (५) नवरात्रि पूजा : अखण्ड दीप, दैनिक ३ घण्टों का संकीर्तन, पूजा, श्री दुर्गा-सप्तशती पाठ, कन्या-पूजन, हवन के साथ सम्पन्न हुई। दिनांक १ जुलाई से शाखा ने 'स्वामी शिवानन्द रेसिडेन्शियल स्कूल' का प्रारम्भ अतिशय पिछड़ी आदिवासी प्रजा के लिए, ६४ छात्रों के साथ, किया।

गुड़ारी (उड़ीसा): दैनिक पूजा, साप्ताहिक सत्संग आश्रम में प्रति गुरुवार को और भक्तों के निवास-स्थानों पर चल-सत्संग प्रति मंगलवार को एवं पादुका-पूजा और नारायण-सेवा पूर्णिमा कोह्वह्वये सब शाखा की सदा सम्पन्न होने वाली गतिविधियाँ हैं। इनके आधिक्य में शाखा ने निज रजत-जयन्ती के एक भाग के रूप से माह अक्तूबर के

दिनांक ११-१२ को दो दिवसीय साधना-शिविर आयोजित की जिसमें श्रीमद् भगवद् गीता पारायण, संकीर्तन, पादुका-पूजा, नारायण-सेवा आदि समाविष्ट थे।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़): नियमित गतिविधियाँह्वह्वदैनिक त्रिवार पूजा, प्रार्थना, ध्यान सत्र, योगासन, २ घण्टों का सान्ध्य-सत्संग। साप्ताहिक : प्रति गुरुवार को पादुका-पूजन, प्रति शनिवार को सुन्दरकाण्ड पारायण। सप्ताह के अन्य दिनों को श्लोकों के और स्तोत्रों के पाठ। विशेष गतिविधियाँह्वह्व(१) नवरात्रि-पूजा : अखण्ड दीप, पूजा, श्री दुर्गा सप्तशती पाठ, १२ घण्टों का अखण्ड कीर्तन नवमी को, हवन, कन्या-पूजन आदि। (२) युवा कैम्प : माह अक्तूबर के दिनांक १९ से दिनांक २८ पर्यन्त, ५५ प्रतिभागियों के साथ शालेय छात्रों के लिए शिविर। (३) श्री गणेश-उत्सव : १२ दिवस पूजा आदि। (४) शिवानन्द-जयन्ती : १२ घण्टों का अखण्ड कीर्तन, पादुका-पूजा आदि। (५) चिदानन्द-जयन्ती : समान कार्यक्रम। (६) परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि : समान कार्यक्रम के अतिरिक्त हवन और भण्डारा। (७) श्री गुरु पूर्णिमा : पुण्यतिथि के समान कार्यक्रम।

काकिनाडा, माधवपट्टनम् (आन्ध्र प्रदेश): प्रति रविवार को और साथ-साथ, प्रति गुरुवार और शुक्रवार को दो अन्य केन्द्रों पर साप्ताहिक सत्संग। पाक्षिक दो होमियोपैथिक शिविरों का भी सातत्य रहा।

कंटाबाँझी (उड़ीसा): शाखा ने अपने साप्ताहिक सत्संग रविवार को, भगवद् गीता के स्वाध्याय सहित सम्पन्न किये।

केओंझरगढ़ (उड़ीसा): शाखा की आयोजित विशेष गतिविधियाँह्वह्व(१) आराधना-दिवस : पादुका-पूजा, प्रवचन, सान्ध्य-सत्संग। (२) श्रीकृष्ण-जयन्ती : विशेष पूजा, प्रवचन, सान्ध्य-सत्संग। (३) परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि : ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, पादुका-पूजा, प्रवचन, सान्ध्य-सत्संग। (४) शिवानन्द-जयन्ती और चिदानन्द-जयन्ती : ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, पादुका-पूजा, और आदरणीय श्री स्वामी ज्ञानानन्द जी द्वारा प्रवचन।

खातिगुडा (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्वह्वदैनिक द्विवार पूजा; प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग; एकादशी-सत्संग; पूजा, हवन-भण्डारा सहित चल-सत्संग, मासिक साधना-दिन तथा दिनांक ३ अक्तूबर को साधना-दिन। विशेष गतिविधियाँह्वह्व(१) नवरात्रि-पूजा : (२) दिनांक १९ अक्तूबर को ५० प्रतिभागियों सहित छात्रों का शिविर।

खुर्दा रोड, जतनी (उड़ीसा): शाखा नियमित रूप से दैनिक सत्संग और मासिक साधना-दिन सम्पन्न करती है।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): दैनिक ब्राह्ममुहूर्तीय २ घण्टों की सभा, सान्ध्य-सत्संग के अतिरिक्त शाखा प्रति गुरुवार को साप्ताहिक चल-सत्संग, प्रति शनिवार को मातृ-सत्संग, एकादशी तिथियों को, स्तोत्र और गीता-पारायण, हर माह की ३ तारीख को ६ घण्टों का अखण्ड महामन्त्र-कीर्तन आदि सम्पन्न होते हैं। विशेष गतिविधियों में नवरात्रि-पूजा में २० अखण्ड दीप, विशेष पूजा, अष्टमी को हवन, २३ कन्याओं की पूजा ६० भक्तों द्वारा प्रसाद-सेवन आदि पूर्ण किये गये। विजयादशमी को हवन किया गया।

नई दिल्ली, वसन्त विहार : शाखा के प्रति रविवार के साप्ताहिक सत्संगों में माह के प्रथम रविवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण, द्वितीय रविवार को ध्यान, तृतीय रविवार को गुरुदेव-साहित्य का स्वाध्याय तथा चतुर्थ रविवार को एक आध्यात्मिक प्रवचन सम्पन्न होते हैं।

फुलबानी (उड़ीसा): दैनिक द्विवार पूजा और प्रति रविवार के साप्ताहिक सत्संगों के आधिक्य में परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि को विशेष कार्यक्रम, शिवानन्द-जयन्ती तथा चिदानन्द-जयन्ती को लक्षार्चना सहित पादुका-पूजा, निर्धनों को भोजन, सान्ध्य-सत्संग और निर्धनों को वस्त्रदान भी परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की जयन्ती को पूर्ण किये गये। इन सब तीन दिन, उत्सवों में १५० भक्तों ने भाग लिया।

रायपुर, शंकर नगर (छत्तीसगढ़): शाखा के साप्ताहिक सत्संग प्रति सोमवार को तथा शिवानन्द-जयन्ती और चिदानन्द-जयन्ती को पादुका-पूजा सम्पन्न हुई।

सालेपुर (उड़ीसा): शाखा के प्रति रविवार के साप्ताहिक सत्संगों में प्रथम रविवार को गीता-पारायण; द्वितीय को योगासन और ध्यान; तृतीय को मासिक साधना-दिन और चतुर्थ को विशेष सत्संग; दिनांक ११ सितम्बर को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण और स्वामी शिवानन्द चैरिटबल अस्पताल द्वारा ८६ मरीजों के उपचार आदि नियमित

गतिविधियों के अतिरिक्त विशेष गतिविधियों में (१) पादुका-पूजा सहित शिवानन्द-जयन्ती, (२) पूजा और अखण्ड जप सहित श्रीकृष्ण-जयन्ती, (३) सत्संग और पूजा सहित विशेष सत्संग श्रीमद् भागवत जयन्ती को, (४) पुण्यतिथि को पादुका-पूजा के साथ सत्संग, (५) चिदानन्द-जयन्ती को पादुका-पूजा और सत्संग।

साउथ बलाण्डा (उड़ीसा): दैनिक द्विवार पूजा; साप्ताहिक सत्संग; साप्ताहिक सत्संग चिदानन्द बाल-विकास केन्द्र द्वारा; शिवानन्द-दिवस और चिदानन्द-दिवस को प्रभात में पादुका-पूजा और सायं-सत्संग एवं संक्रान्ति-दिन को महामृत्युंजय मन्त्र के अखण्ड जप के आधिक्य में शाखा ने दिनांक २३ अक्तूबर को ३ घण्टों का महामन्त्र-संकीर्तन और भक्तों द्वारा प्रसाद-सेवन सम्पन्न हुए।

सुनाबेडा (उड़ीसा): शाखा की नियमित गतिविधियाँह्न साप्ताहिक द्विवार सत्संग। शाखा की विशेष गतिविधियाँह्न(१) श्रीकृष्ण-जयन्ती का उत्सव, (२) परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि को विशेष सत्संग, (३) शिवानन्द-जयन्ती; (४) श्री गणेश चतुर्थी को पूजा, (५) श्रीमद् भागवत जयन्ती, (६) चिदानन्द-जयन्ती, (७) दिनांक २५, २६ और २७ सितम्बर को विशेष सत्संग।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): शाखा ने दिनांक ३, ७, १० और २४ अक्तूबर कोह्नह्नसब रविवार के दिनह्नह्नसत्संग किये। शिवानन्द-जयन्ती को विशेष कार्यक्रमों में पादुका-पूजा, भजन, नाम-संकीर्तन, जप, आरती आदि सम्पन्न किये।

विक्रमपुर (उड़ीसा): शाखा द्वारा दैनिक द्विवार पूजा के पश्चात् प्रर्थना और ध्यान-सत्र; साप्ताहिक सत्संग के आधिक्य में विशेष गतिविधियों में, (१) परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि को ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान सभा, सहस्रार्चना सहित पादुका-पूजा; निर्धनों को भोजन और सान्ध्य-सत्संग। (२) शिवानन्द-जयन्ती की ब्राह्ममुहूर्त से ले कर प्रभातीय और अपराह्न के ध्यान, पादुका-पूजा, प्रवचन, नगर-संकीर्तन और सान्ध्य-सत्संग। (३) ज्ञानयज्ञ : दिनांक ८ सितम्बर से दिनांक १२ सितम्बर पर्यन्त ५ दिवसीय भगवद्गीता पर प्रवचन आदरणीय श्री स्वामी आनन्दस्वरूपानन्द जी द्वारा दिये गये। (४) गणेश चतुर्थी। (५) चिदानन्द-जयन्ती को ब्राह्ममुहूर्तीय ध्यान, प्रभातफेरी, पादुका-पूजा, मन्त्र-जप, प्रवचनों युक्त सान्ध्य-सत्संग, ९५ मोमबत्तियों के प्रकाश का सुशोभन; ९३ छात्रों को मिठाइयाँ और पेन का वितरण। (६) एक स्कूल में एक आध्यात्मिक प्रवचन। (७) ३०० कैदियों के साथ सत्संग।

विदेशी शाखा

हांगकांग (चीन) : जून, जुलाई और अगस्त की माहावधियों में शाखा ने क्रमशः ४६, ४७ और ४८ प्रतिभागियों सहित द्वितीय शनिवार को, १ घण्टे पर्यन्त महामृत्युंजय मन्त्र जप, श्री हनुमान चालीसा और गुरुदेव के साहित्य पर प्रवचन युक्त मासिक सत्संग किये। क्रमशः २०, २८ और २५ प्रतिभागियों सहित शेष शनिवार के दिनों को महामन्त्र संकीर्तन किया गया। तीन महीनों की अवधि में ७४८ नये प्रतिभागियों के साथ शाखा ने नियमित योगासन-वर्ग परिचालित किये। शाखा द्वारा ३२ प्रतिभागियों के साथ जुलाई माह के दिनांक २५ से अगस्त माह के दिनांक ८ पर्यन्त, अगस्त माह के दिनांक २२ से माह सितम्बर के दिनांक ५ पर्यन्त १४ प्रतिभागियों के साथ योग के कार्यशिविर सम्पन्न किये गये। विशेष गतिविधियाँ : (१) योग-सेन्टर के १० वें स्थापना-दिन के निमित्त में वर्ष २००० से वर्ष २०१० पर्यन्त का एक स्मृति-अंक प्रकाशित किया गया। (२) बड़ी आयु के व्यक्तियों हेतु चलने वाले योग-वर्गों के लिए योग-शिक्षकों की सुविधा सम्पन्न की गयी। (३) श्री गुरु पूर्णिमा : ३८ प्रतिभागियों सहित पादुका-पूजा की गयी। (४) पुण्यतिथि : ३८ प्रतिभागियों द्वारा १ घण्टा महामृत्युंजय मन्त्र-जप किया गया। (५) शाखा विविध सामाजिक सेवाएँ सम्पन्न करती है।

विशेष रिपोर्ट

परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज की हांगकांग की यात्रा

परम पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने दिनांक २३, २४ अक्तूबर को ७१ प्रतिभागियों की उपस्थिति में योग-सेमिनार का परिचालन किया। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रवचन भी दिये। दिनांक २६ अक्तूबर को उन्होंने ७४ प्रतिभागियों को 'योगाभ्यास का आनन्द' विषयक एक जाहीर व्याख्यान दिया। उन्होंने ५७ प्रतिभागियों को दिनांक २७ और २८ अक्तूबर को ध्यान विषयक व्याख्यान दिये। □